Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

terapanthtimes.com

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अज्ञानी लोग अधर्म के कार्य को धर्म में और धर्म के कार्य को अधर्म में डाल देते हैं। वे दोनों ओर से बंध जाते हैं, उनकी दुर्गति होती है।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 26 • 01 - 07 अप्रैल, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 30-03-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

जीवन में हो विशेषताओं को विकसित करने का प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

■ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी की पुण्यतिथि एवं साध्वी पानकुमारी जी 'द्वितीय' की स्मृति सभा का आयोजन

पिंपरी चिंचवड़।
24 मार्च, 2024

पिंपरी चिंचवड़ प्रवास के दूसरे दिन एलप्रो इंटरनेशनल स्कूल के प्रांगण में तेरापंथ सरताज युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करवाते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में अनेक विशेषताएं हो सकती हैं तो अनेक कमियां भी हो सकती हैं। किसी आदमी में विशेषताओं का पलड़ा भारी होता है और कमियों का पलड़ा हल्का होता है। किसी में विपरीत भी हो सकता है। किसी आदमी में पांच अच्छाइयां हैं पर एक बुराई ऐसी आ जाती है कि वे पांच विशेषताऐं गौण जाती हैं।

कभी-कभी पांच छोटी-छोटी कमियां होने पर भी एक विशेषता अच्छी उभरती है कि वे पांच कमियां दब जाती हैं। हम अपने जीवन में अच्छी विशेषताओं को उभारने का, विकसित करने का प्रयास करें। यह एक लक्ष्य बने कि मुझे कमियों को कम करना है और अच्छाइयों को विकसित करना है। लक्ष्य के अनुरूप हमारा प्रयास चलता रहे तो व्यक्ति बहुत आगे बढ़ सकता है।

विद्यालयों में कई बार अच्छे सूक्त लिखे मिलते हैं, उनको बार-बार पढ़ा जाता है, तो दिमाग में अच्छा प्रभाव पड़ सकता है, अच्छी दृष्टि प्राप्त हो सकती है। दृष्टि अच्छी हो जाए तो जीवन की सृष्टि भी अच्छी हो सकती है। हम अपने जीवन में अच्छाइयों को उभारने का प्रयास करें।

व्यक्ति के जीवन ने कोई खासियत होनी चाहिए। यह सोचें कि जिस संगठन में मैं रहता हूं वहां मेरी उपयोगिता होनी चाहिए। जीवन में किसी विषय में विशिष्टता आ जाये तो अच्छी बात हो सकती है। उससे दूसरों को भी लाभ मिल सकता है। अपने-अपने क्षेत्रों में गृहस्थों में विशेषता हो, साधु-साध्वियों व समणियों में भी अपनी-अपनी विशिष्टता हो सकती है।

बैंगलोर के श्रावक विजयराजजी मरोठी तत्त्वज्ञान में विशेषज्ञ थे। अनेक चारित्रात्माओं एवं समणियों ने उनसे तत्त्वज्ञान के संदर्भ में समाधान प्राप्त करने का प्रयास किया होगा। हमारे दूसरे दशक के जो चारित्रात्माएं हैं, वे भी किसी न किसी क्षेत्र में विशेषज्ञ बनने का प्रयास करें। सेवा, साहित्य लेखन, प्रबंधन कौशल, संयोजन, प्रस्तुति करण आदि अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का सम्यक उपयोग हो, उनमें विशेषज्ञ बनने का प्रयास करें।

जहां जो अच्छी चीज मिले, उसे ग्रहण करते जाएं, ग्राहक बन कर रहें। जगह-जगह हमारी यात्राएं होती हैं, वहां से कुछ न कुछ सीखने का, ग्रहण करने का प्रयास करें। चारित्रात्माएं हो या गृहस्थ हो सभी अपने-अपने क्षेत्र में दक्षता ग्रहण करें। विशेषता का, दक्षता का विकास हमारे जीवन में हो।

चतुर्दशी के अवसर पर पूज्य प्रवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा प्रदान करवायी। शासनमाता साध्वीप्रमुखा महाश्रमणी कनकप्रभाजी के द्वितीय वार्षिक पुण्य तिथि के अवसर पर जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित व 'शासनगौरव' साध्वी कल्पलता जी द्वारा संकलित ग्रन्थ 'सादर स्मरण शासन माता' पूज्य प्रवर के श्री चरणों में लोकार्पित किया गया।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आज फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी है। आज के दिन, दो वर्ष पहले, दिल्ली में हमारे धर्मसंघ की आठवीं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का महाप्रस्थान हो गया था। उन्होंने जितने लंबे समय तक साध्वीप्रमुखा पद पर सेवा दी वह एक कीर्तिमान है। गुरुदेव तुलसी ने उन्हें छोटी उम्र में ही साध्वीप्रमुखा पद पर स्थापित कर दिया था। उनको महाश्रमणी व संघ महानिदेशिका पद पर भी प्रतिष्ठित किया था। साध्वी समुदाय की देख-रेख का काम तो वे करती ही थी, साहित्य के क्षेत्र में भी उनकी प्रतिभा थी। संस्कृत का भी उनका अच्छा अध्ययन था, वे विदुषी थी, उनमें अनेक विशेषताएं थी। उन्होंने धर्म संघ में अच्छी सेवाएं दी।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सुखी बनने के लिए सुकुमारता, कामना, द्वेष और राग को छोड़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

पिंपरी चिंचवड़।
23 मार्च, 2024

तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी होली चातुर्मास एवं चार दिवसीय प्रवास हेतु पिंपरी चिंचवड़ पधारे। संयम सुमेरू ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी सुखी जीवन जीना चाहता है। कई बार सुख की चाह होते हुए भी आदमी की भेंट दुःखों से हो जाती है। हमारी दुनिया में शारीरिक दुःख जैसे बुढ़ापा, बीमारी आदि भी होते हैं और मानसिक दुःख भी होते हैं। सारे दुःखों के मूल में कार्मण शरीर और मोहनीय कर्म है। शास्त्रकार ने संसार में सुखी रहने के कुछ निर्देश दिए हैं।

पहली बात है - अपने आप को तपाओ, सुकुमारता को छोड़ो। कहीं सुविधा न मिले तो कठोरता में रहने का भी अभ्यास होना चाहिए। कठिनाई से डरकर दूर नहीं भागना चाहिए। कठिनाई का सामना करने से वह दूर भी हो सकती है। परिस्थिति को मन से स्वीकार कर लिया जाए तो उसके पश्चात परेशानी नहीं होती।

दूसरी बात है- कामनाओं को छोड़ो। भौतिक चाह पूरी नहीं होती तो वह भी दुःख का कारण बन सकती है। मन में संतोष रखें, अवांछनीय रूप में कामनाएं नहीं होनी चाहिए। भीतर में लालसा होती है तो दुःख का कारण बन सकती है।

तीसरी बात है- द्वेष को छिन्न करो। दूसरे को सुखी देखकर हमें दुःखी नहीं बनना चाहिए और दूसरे को दुःखी देखकर हमें सुखी नहीं बनना चाहिए। मन में प्रमोद भाव रहे, ईर्ष्या का भाव नहीं रखना चाहिए। दूसरों की विशेषताओं को जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

कहा गया है- दूसरे में परमाणु जितना भी गुण है उसको भी प्रमोद भावना से पर्वत जितना रूप देकर मन में प्रसन्नता का अनुभव किया जा सकता है। हम पर्वत जितना रूप न दे सकें पर जितना है उतना स्वीकार करने का प्रयास करें।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

मैत्री भाव से नष्ट करें दूसरे के मन का वैमनस्य : आचार्यश्री महाश्रमण

निंदा करने वाले के प्रति भी अच्छा व्यवहार करें तो उसका व्यवहार बदल सकता है।

ताथावड़े।
22 मार्च, 2024

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः अपनी धवल सेना के साथ लगभग 13 किमी का विहार कर ताथावड़े पधारे। पूज्यवर ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर क्षमा की वृत्ति होती है और वैर भाव की वृत्ति भी हो सकती है। कभी गुस्से का भाव आ जाता है तो कभी क्षमा का भाव भी उभर जाता है। कभी शत्रुता का विचार उभरता है तो कभी मैत्रीपूर्ण भाव भी हमारे भीतर प्रस्फुटित हो सकते हैं। सबके प्रति मैत्री का भाव विकसित होना साधना की ऊंचाई की बात हो जाती है।

कहा गया है -

'रहिमन वे नर मर चुके, जो कहीं मांगण जाय।
उनसे पहले वे मरे, जिण मुख निकसत नाय।।'

मांगना बुरी बात है पर कोई मांगे और देने वाले के मुंह से ना निकल जाये तो वह उसकी अपेक्षा अधिक खराब है। अनुकूलता हो तो किसी को ना नहीं कहनी चाहिए। देने का आनुकूल्य ना हो तो भी सब प्राणियों के प्रति मैत्री भाव रहना चाहिए।

क्षमादान देना बड़ी बात है। कोई जीव अपनी नीच प्रकृति को नहीं छोड़ता है तो साधु को भी साधुता की प्रकृति नहीं छोड़नी चाहिए। गुस्सा करना तो हमारी कमजोरी हो सकती है। हमारी वाणी में असभ्यता, अपशब्द न आये। कहा गया है- सहन करो, सफल बनो। छोटे ही नहीं बड़ों को भी कभी-कभी सहन करना होता है। क्षमा धर्म हमारे जीवन में रहे। प्रतिकूलता को भी शांति से सहनकर लें, सहिष्णुता रखें। ईर्ष्या का भाव न रखें। कोई आलोचना करे, उसके प्रति भी मंगलभावना करें। पातंजल योग दर्शन में कहा गया है कि अहिंसा की प्रतिष्ठा भीतर में हो जाये तो उसके सान्निध्य में आने वाले व्यक्ति का भी वैर भाव दूर हो सकता है। हमारी मैत्री भी कई बार दूसरों को प्रभावित करने वाली बन सकती है। निंदा करने वाले के प्रति भी अच्छा व्यवहार करें तो उसका व्यवहार बदल सकता है। हमारे मैत्री भाव से दूसरे के मन का वैमनस्य नष्ट हो सकता है।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रकाश गांधी, प्रकाश छाजेड़, डिंपल छाजेड़, संगीता चपलोत ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल पिंपरी चिंचवड़ ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

जीवन में हो विशेषताओं...

आचार्य महाप्रज्ञ जी उनसे 21 वर्ष बड़े थे और मैं उनसे 21 वर्ष छोटा था। वे एक असाधारण साध्वीप्रमुखा थी। आज उनकी दूसरी वार्षिकी है। उनके जीवन से हम प्रेरणा प्राप्त करें, उनकी आत्मा खूब विकास करे।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने शासनमाता को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मैं जब शासनमाता के जीवन को देखती हूं तो मुझे उनमें लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा ये तीनों रूप दिखाई देते हैं। उनमें ज्ञान की सम्पदा थी, आध्यात्मिक वैभव था और उनके पास बाह्य और आन्तरिक शक्ति भी थी। उन्होंने अपनी शक्ति का उपयोग सृजन शीलता में, लेखन और वक्तृत्व में, साहित्य सृजन में, जनता की सार-संभाल में, महिलाओं को जगाने में और साध्वियों को तैयार करने में किया। उनके द्वारा बताए गए जीवन रहस्यों से हम भी हमारे जीवन में आगे बढ़ते रहें।

साध्वीवर्याजी संबुद्धयशा जी ने कहा कि धर्मसंघ की अष्टम् साध्वीप्रमुखा को मैं अर्जुन के रूप में देखती हूं। उन्हें गुरुदेव श्री तुलसी की विराट कृपा प्राप्त हुई थी। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भी उन्हें असाधारण साध्वीप्रमुखा एवं शासन माता का अलंकरण प्रदान किया था। किसी साध्वी प्रमुखा का अमृत महोत्सव मनाना, उनके देवलोक गमन के पश्चात उनके लिए कोई मंत्र देना ये भी अपने आप में इतिहास की विरल घटनाएं थी। वे दिव्य विभूति थी। उनकी शिक्षाएं अपनाकर हम भी संघ में योगभूत बनें।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वियों की व्यवस्था के संदर्भ में आचार्यों को साध्वीप्रमुखा से बड़ी सहायता मिलती है। अष्टम् साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी एक विलक्षण साध्वी प्रमुखा थी, जिन्हें तीन-तीन आचार्यों का नेतृत्व मिला। न केवल साध्वी समुदाय को, श्रावक-श्राविकाओं को भी उन्होंने अच्छी तरह संभाला था। साधु समुदाय को भी उनसे प्रेरणा प्राप्त होती रहती थी।

साध्वी वृंद ने 'शासनमाता के चरणों में हम श्रद्धांजलि अर्पित करते' गीत का सुमधुर सामूहिक संगान किया। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने भी शासनमाता साध्वी प्रमुखा श्री के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम से पूर्व पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में 'शासनश्री' साध्वी पानकुमारीजी 'द्वितीय' की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आदमी जन्म लेता है, जीवन जीता है और एक दिन कालधर्म को भी सम्प्राप्त हो जाता है। केवल मनुष्य ही नहीं हर प्राणी के साथ ऐसा होता है। विशेष बात यह होती है कि प्राणी जीवन किस प्रकार का जीता है। मनुष्य भव प्राप्त कर साधुपन प्राप्त करना और अंतिम श्वास तक उसे निभा देना और बड़ी बात हो जाती है। साध्वी पानकुमारीजी 'द्वितीय' एक वयोवृद्धा साध्वी थी। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के द्वारा वे दीक्षित हुयी थी। आचार्यप्रवर ने साध्वीश्री का परिचय देते हुए सम्यक्त्व युक्त चारित्र के महत्त्व को उजागर किया एवं मध्यस्थ भावना के प्रयोग के रूप में चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी ने कहा कि साध्वी पानकुमारी जी एक सौभाग्यशाली साध्वी थी जिन्हें पांच साध्वी प्रमुखाओं के दर्शन करने का योग प्राप्त हुआ। वे पंचाचार की साधना करने वाली, स्वाध्याय प्रेमी साध्वी थी। आगम के प्रति, तत्त्व के प्रति उनके मन में गहरी निष्ठा थी, ज्ञान के प्रति अभिरुचि थी।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि 'शासनश्री' साध्वी पानकुमारी जी 'द्वितीय' सरलमना, स्वाध्याय शीला, जागरूक साध्वी थी। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए मोक्षश्री का वरण करें। साध्वी गौरवयशा जी, साध्वी रुचिरप्रभा जी एवं मुनि हिमकुमार जी ने भी साध्वी पानकुमारीजी के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किये।

आचार्य प्रवर के स्वागत में ज्ञानशाला के विद्यार्थियों ने सुंदर प्रस्तुति दी। एलप्रो स्कूल की प्रिंसिपल अमृता बोहरा, स्थानीय तेयुप अध्यक्ष अमित कांकरिया, टीपीएफ अध्यक्ष दर्शन लोढ़ा, महिला मंडल अध्यक्षा शालिनी सिंघी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ कन्या मंडल की सदस्याओं ने अपनी भक्ति परक प्रस्तुति दी। डॉ. कल्याण गंगवार ने अपनी पुस्तक 'सुखी जीवन का आधार-शाकाहार' पूज्य चरणों में लोकार्पित कर अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सुखी बनने के लिए...

चौथी बात बताई गयी- राग भाव को दूर करो। साधु कहीं ममत्व न करे। गृहस्थ भी अपने जीवन में इन बातों को अपनाने का प्रयास करें। इन सब बातों को अपनाने से हम संसार में सुखी जीवन जी सकते हैं। 'मैं नहीं हम' सब बढ़िया बनें, सुखी बनें। विकास का आकाश सबके लिए खुला है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि तेरापंथ धर्मसंघ एक नेतृत्व वाला धर्मसंघ है। हमारी आस्था के केंद्र आचार्य ही रहते हैं। आचार्य के इंगित को हर व्यक्ति स्वीकार करने का और उसे जीवन में उतारने का प्रयत्न करता है। आचार्य का इंगित सबके लिए मननीय और चिंतनीय होता है। आचार्य का व्यक्तित्व अध्यात्म सम्पन्न व्यक्तित्व होता है। एक प्रकार का व्यक्तित्व 'प्रो-एक्टिव पर्सनालिटी' का होता है जो व्यक्ति की समस्याओं की ओर ध्यान देकर उनके समाधान करने का प्रयास करता है। दूसरा 'पुल पर्सनालिटी' वाला व्यक्तित्व दूसरों को अपनी ओर खींचता है। आचार्य प्रवर के व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण है। आचार्यप्रवर में प्रो एक्टिव पर्सनालिटी भी है तो पुल पर्सनालिटी भी है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सभाध्यक्ष प्रकाश गांधी, एलप्रो इंटरनेशनल स्कूल से राजेंद्र डाबड़ीवाल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ महिला मंडल ने संयुक्त रूप से स्वागत गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्‌गार

स्वच्छ व्यवहार ने मेरे दिल में एक बहुत बड़ा स्थान बनाया

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलताजी मेरे अग्रगण्य, उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी स्वामी की संसारपक्षीय सहोदरी थी। मेरा प्रथम बार उनसे मिलन कालवा देवी स्कूल मुंबई में हुआ। उनके विनम्र, सरल, स्वच्छ व्यवहार ने मेरे दिल में एक बहुत बड़ा स्थान बनाया। कांदीवली चतुर्मास में साध्वीश्री की गोल्डन जुबली पर मैंने प्रथम बार ९ दिन की तपस्या की उस समय साध्वीश्री ने सरस और हृदयग्राही गीत बनाकर मुझ में एक ऐसी शक्ति का संचार किया कि मात्र ७ वर्षों में १९ मासखमण हो गए। इस वर्ष हमने दिल्ली चातुर्मास पूर्ण कर पूज्य प्रवर के वाशी में दर्शन किये। पूज्य प्रवर ने हमें उसी दिन साध्वीश्री को सेवा दर्शन पाथेय देने भिजवा दिया। लंबा रास्ता होते हुए भी हम लोग उसी दिन साध्वी श्री के लिए दादर सकुशल पहुंच गये।

'शासनश्री' अपने सहोदर मुनि को निहार कर उनके दर्शन कर अपने भाग्य की सराहना करने लगी। सुमधुर गीत गाकर भाई का स्वागत किया, पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी और साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी का संदेश पाकर मानों एक बार पूर्व स्वस्थता की अनुभूति करने लगी।

एक घंटे से ज्यादा व्हील चैयर पर बैठकर सेवा की, दूसरे दिन लगभग तीन घंटा सेवा की उनकी प्रसन्नता देखकर सुनकर एक बार सभी ने निश्चिंतता की अनुभूति की। हम लोग भी एक बार मर्यादा महोत्सव के लिए श्री चरणो में पहुंच गये। गुरुदेव की दूरदृष्टि का ही यह सुपरिणाम मानता हूं कि पूज्यप्रवर ने हमें समय पर मंगल पाठ सुनाया और हम साध्वी श्री को सेवा करवाने पुनः दादर आये। साध्वीश्री की स्थिति देखकर लगा कि अब ज्यादा समय नहीं लगता मेरी भावना थी कि मैं साध्वीश्री को एक थोकड़े की भेंट दूं। साध्वीश्री भी तप में लग गये अंत में तेले में चौविहार संथारा स्वीकार कर चार तीर्थ के मध्य देवलोक पधार गई, मेरे भी १८ दिन की तपस्या हो गई। ऐसी पुण्यात्मा, धन्यात्मा के प्रति यही मंगल कामना करता हूं कि वे उत्तरोत्तर विकास करती हुई अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करें।

– मुनि नमिकुमार

समत्व योग की साधिकाः साध्वी सोमलताजी

सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति साध्वी प्रमुखाश्री लाडांजी के कर कमलों से एक मात्र दीक्षित साध्वी सोमलताजी हमारे धर्मसंघ की एक दीपती साध्वी थी। वे प्रतिभा संपन्न थी, गायक थी और गीतकार भी थी। कुशल प्रवचनकार थी।

मैंने अनुभव किया उनकी भाषा के पुद्‌गल शुभ थे। श्रोताओं को प्रियता की अनुभूति होती थी। उनकी योग्यता का अंकन करते हुए गुरुदेव श्री तुलसी ने उनको अग्रणी का दायित्व सौंपा। वे जहां भी गई, अपना प्रभाव छोड़ा और धर्मसंघ की विशेष प्रभावना की।

पिछले कई वर्षों से बहुत सारी अनुकूलताएं होते हुए भी वे स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रायः संघर्ष करती रही। फिर भी वे मन से, भावनाओं से प्रायः स्वस्थ रही। देह भाव से ऊपर उठकर आत्मभाव में, स्वभाव में रमण करती रही। तीव्र असातोदय में भी उन्होंने जो समत्व का, आत्मलीनता का परिचय दिया वह अद्भुत था। साध्वी सोमलताजी विशेष सौभाग्यशालिनी थी कि उन्हें मोहमयी मायानगरी मुम्बई में परम पूज्य कल्याण कल्पतरू युगप्रधान आचार्य प्रवर श्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में गुरुकुलवास में रहने का दुर्लभ योग मिला। साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी तथा साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी की सेवा और संभाल में रहकर उन्होंने विशेष धन्यता का अनुभव किया।

उग्रविहारी, तपोमूर्ति मुनिश्री कमल कुमारजी स्वामी का प्रलंब विहार कर पधारना, सेवा और समाधि प्रदान करना, मानों दोनों की साधना और संकल्प शक्ति का चमत्कार था।

अंतिम समय में अनशन पूर्वक पार्थिव शरीर को त्याग कर वे निर्बंध बन गई। साध्वी शकुंतलाश्री जी, संचितयशाजी, जागृतप्रभाजी, रक्षितयशाजी ने आत्मीय भाव से सेवा कर उनकी समाधिपूर्ण साधना में सहयोगी बनी, वह भी प्रशस्य है। साध्वी सोमलता जी प्रयाण कर गई, पर उनकी सुयश सुरभि संघ उपवन में सदा महकती रहेगी। उनके आत्मोदय की यात्रा वीतरागता का वरण करे, मंगलकामना।

–शासन गौरव साध्वी कनकश्री

उनका मनोबल और समत्व विशेष था

तेरापंथ धर्मसंघ के साध्वी समाज का एक जाना पहचाना नाम है– साध्वी सोमलताजी। उनका व्यक्तित्व गुणों का समवाय था। वे एक मधुर गायिका एवं सुन्दर गीत निर्मात्री के रूप में प्रसिद्ध रही हैं। उनकी गण–गणपति के प्रति भक्ति विशेष थी। उनका विनोदी स्वभाव पास आने वाले को आकर्षित किए बिना नहीं रहता। उनका बोलने का लहजा अपने ढंग का था। श्रावक समाज भी उनकी सार–संभाल से प्रभावित था। गुरुकुलवास में हमने अनेक बार देखा गुरुदेव तुलसी जब कभी प्रवचन में पधारने से पूर्व प्रवचन प्रारम्भ करने का निर्देशन दिलवाते तो वे उत्साह के साथ तैयार रहती थी। कई वर्षों से उनके साथ असाता वेदनीय का योग बना हुआ था। शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद उनका मनोबल और समत्व विशेष था। गुणी व्यक्तियों के गुणगान करने में उनकी जिह्वा मुखर रहती थी, जो प्रमोदभाव का फलित है। वे सौभाग्यशालिनी थी कि उन्हें संयम जीवन का अंतिम चातुर्मास गुरुचरणों में करने का अवसर मिला। उन्हें गुरुदेव की विशेष कृपा और ऊर्जा प्राप्त हुई। उन्होंने धर्मसंघ और संघपति की सेवा की। आज वे हमारे बीच नहीं हैं। मैं मंगलकामना करती हूं कि उनकी आत्म जहां भी है अपना आध्यात्मिक उत्थान करती हुई मंजिल को प्राप्त करें।

–साध्वी जिनप्रभा

धर्मसंघ की प्रभावक साध्वी थीं साध्वी सोमलताजी

सहज–सरल, विदुषी साध्वीश्री सोमलताजी हमारे धर्मसंघ की प्रभावक साध्वी थी। गुरु दृष्टि और इंगित आकार के अनुरूप धर्म संघ को सेवा दी। आचार्यों के हृदय में विशेष स्थान बनाया। आपके जीवन में विनम्रता, सेवाभावना, संघ निष्ठा परिलक्षित होती। स्वाध्याय, ध्यान आपकी दिनचर्या के अभिन्न अंग रहे। आप उग्रविहारी, तपोमूर्ति मुनिश्री कमल कुमारजी स्वामी की सहोदरी थी। आप दोनों भाई बहन ने दीक्षित होकर संघ सेवा और धर्म प्रभावना में अपनी शक्ति का नियोजन किया। मुनिश्री कमल कुमारजी स्वामी भी आपको दर्शन देने के लिए दिल्ली से मुम्बई पधारे। मुनिश्री वैसे भी लम्बे–लम्बे विहार करते हैं परंतु इस बार गुरु दर्शन और भगिनी से मिलन अपने आप में ऐतिहासिक रहा। आप ने मनोबल से असाध्य तीव्र वेदना को सहज समता से सहन करके कर्म निर्जरा की। संलेखना संथारा करके देह से विदेह यात्रा की प्रस्थान किया। आप की आत्मा परम पद की और सदैव गतिमान रहे। इसी आशा विश्वास के साथ। –मुनि रमेश कुमार

संथारा स्वीकार कर वीरवृत्ति का परिचय दिया

ज्ञात हुआ कि मुंबई मे 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी ने तिविहार संथारा पचखा और सीझ भी गया। उन्होंने पूर्वांचल के असम आदि सुदूर प्रांतों की यात्राएं कर धर्मसंघ की खूब प्रभावना की। संसारपक्षीय दृष्टि से गंगाशहर की होने के कारण मेरे (मुनि सुमतिकुमारजी के) मन में उनके प्रति विशेष अहोभाव था। उन्होंने संथारा स्वीकार कर जिस वीरवृत्ति का परिचय दिया, उससे सम्मान का वह भाव ओर वृद्धिंगत हो गया। वस्तुतः वे एक वीरपुत्री थी।

आदरणीया साध्वीश्री बहुत ही सौभाग्यशालिनी रही हैं। जीवन के अंतिम चातुर्मास में परम पावन श्रद्धेय आचार्यप्रवर की सेवा–उपासना का दुर्लभ अवसर उन्हें प्राप्त हुआ। मानों आगामी यात्रा का भरपूर पाथेय पूज्यश्री द्वारा उन्हें प्राप्त हुआ है। और अब अंतिम समय में अपने संसारपक्षीय भाई महाराज उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी स्वामी का सान्निध्य मिल गया। वे धन्य–धन्य हो गई, ऐसा प्रतीत होता है। मुनि कमलकुमारजी स्वामी का व्यक्तित्व, उनका आभामंडल तपोमय रहा है। मुनिश्री अपने संपर्क में आनेवाले को तपस्या के प्रति विशेष रूप से उन्मुख करते हैं। हम तो इसी संवाद की प्रतीक्षा में थे कि कब वे बहिन महाराज को अनशन पचखाएं। अब अनशनरत, संथारा–साधिका बहिन महाराज को देखकर उन्हें अपनी दिल्ली से मुंबई की प्रलंब यात्रा की सार्थकता की अनुभूति हो रही होगी। साध्वीश्री विशेष पुण्यवान थी। उन्हें जिनशासन की शरण, अर्हत्वाणी का श्रवण, भिक्षु शासन की छत्रछाया, पूज्यश्री द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन आदि सुखद निमित्त प्राप्त थे। साध्वीश्रीजी की असाध्य बीमारी की स्थिति में भी सहवर्तियों के द्वारा जो सेवा की गई वह भिक्षु शासन की उज्जवल सेवा परंपरा की एक कड़ी बन गई। मुनि जयकुमारजी भी यहीं साथ में ही प्रवासित है। उनकी तथा हम सभी संतों की ओर से दिवंगत आत्मा के आध्यात्मिक उत्थान के प्रति मंगलकामना।

–मुनि सुमतिकुमार, मुनि जयकुमार आदि मुनिवृंद

तुम्हारे साहस और शौर्य को साधुवाद

ज्यों ही संवाद सुना कि 'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी ने अनशन स्वीकार किया है, प्रभु महावीर का यह वाक्य गुंजित होने लगा ''इच्चेतं विमोहायतणं हिय सुहं, खमं निस्सेयसं आणुगमियं''। यह मरण प्राण विमोह की साधना का आयतन, हितकर, सुखकर, कालोचित, कल्याणकारी और भविष्य में साथ देने वाला होता है। अपने तीसरे मनोरथ को पूर्ण कर तुम धन्य हो गई, शत–शत साधुवाद तुम्हारे साहस और शौर्य को। तुम अत्यन्त सौभाग्यशालिनी हो कि गुरु दर्शन और सेवा का सुअवसर पा लिया। तपोमूर्ति कमल मुनि का सान्निध्य और सहयोग मिल गया। 55 वर्ष पूर्व की स्मृतियां ताजा हो रही हैं जब सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति साध्वी प्रमुखा लाडांजी ने तुम्हें हमारे बीदासर में दीक्षा प्रदान की। चाहे तुम गंगाशहर की हो पर असली जन्म तो हमारे बीदासर में ही हुआ और ओज आहार भी बीदासर का ही लिया, उसका भी अपना महत्व है। चढ़ते हुए वर्धमान परिणामों से अपना काम सिद्ध किया, संथारा संपन्न हो गया। धन्य–धन्य तुम्हारे शौर्य और साहस को...

– साध्वी अमितप्रभा

साधुत्व की शोभा को शतगुणित किया

'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी का अनशन के साथ देवलोक गमन हो गया। वे प्रबुद्ध, श्रमशील, संघनिष्ठ साध्वी थी। काफी वर्षों से वेदनीय कर्म के साथ जूझ रही थी। साध्वीश्री जी के जितना वेदना का योग था तो पुण्य का भी प्रबल योग था। मैंने देखा नंदनवन में आपका मनोबल और उत्साह शिखर को छू रहा था। अंतिम समय में गुरु सेवा का लाभ प्राप्त किया और साधु जीवन के अंतिम चरण अनशन के साथ साधुत्व की शोभा को शतगुणित कर लिया। बड़े–बड़े क्षेत्रों में चातुर्मास किया। तीव्र वेदना होने पर भी आप क्षेत्रों में विचरण करते थे। आपकी सहिष्णुता बेजोड़ थी। संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा बेजोड़ थी। आपको गंगाशहर की पावन धरा पर अवतरित होने का भाग्य प्राप्त हुआ तो 'उग्रविहारी तपोमूर्ति' मुनि कमल कुमार जी स्वामी की भगिनी कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। साध्वी शकुंतलाश्री जी, साध्वी संचितयशा जी आदि साध्वियों ने बहुत सेवा की है। सेवा महानिर्जरा का साधन है, जिसे चारों ही साध्वियों ने बहुत तन–मन से की है। अब चारों साध्वियां मनोबल बनायें रखें। सभी साध्वियों के चित्त समाधि की मंगल कामना करते हैं। दिवंगत आत्मा के उर्ध्वारोहण की मंगल कामना।

–साध्वी पंकज श्री

अनंत विशेषताओं की समवाय

वाणी में माधुर्य, होठों पर मुस्कान, आंखों में ममता, हृदय में उमंग, गाते हुए बढ़ो, हंसते हुए मिलो, मुस्कुराते हुए विदा... इन पंक्तियों में प्रतिबिंबित था 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी का जीवन। वे अनंत विशेषताओं की समवाय थी, कैसी भी परिस्थिति आए, उन्हें हर हालात में जीने का हुनर आता था। अपना बनाने की उनमें अद्भुत कला थी। अपने आत्मीयता पूर्ण निश्छल व्यवहार से प्रथम मिलन में ही सबका मन मोह लेती थी। वह दिन कितना सुहाना, पवित्र और भव्य उजाला भरने वाला था जिस दिन परम प्रतीक्ष्य गुरुदेव श्री तुलसी के निर्देशानुसार साध्वीप्रमुखा श्री लाडांजी ने तुम्हें अनमोल संयम रत्न प्रदान किया था। अनंतकाल से भटकती आत्मा के लिए यह सर्वोत्तम उपलब्धि थी। तपोमूर्ति उग्रविहारी मुनि कमलकुमार जी की बड़ी बहिन होने का सौभाग्य उन्हें मिला था। वे पुरुषार्थ की नजीर थी, हर कार्य में वे आगे रहती थी। उनके साथ जीए गए मधुरिम पल स्मृति पटल पर उभर रहें हैं, पर उन्हें शब्दों में बांधना बड़ा मुश्किल है । मैं मंगलकामना करती हूं दिवंगत आत्मा की चेतना के उर्ध्वारोहण की। शीघ्र उनकी आत्मा मोक्ष श्री का वरण करे।

–साध्वी यशोधरा

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्गार

जीती बाजी जीवन में

● साध्वी शारदाश्री ●

जीती बाजी जीवन में, संयम के समरागंण में।
जूझे कर्मों से हंसते-हंसते, सोमलता जी।।

रतनलाल जी तात तुम्हारे, माताजी केशर बाई।
दो बहिनों में आप अग्रजा, छक्कं छक्का थे भाई।
गंगाणे के गौर थे, बैद कुल की सौरभ थे।।

छोटी वय में बन वैरागण, नश्वरता को जान लिया।
ज्ञान, ध्यान, चर्चा, वार्ता कर, संयम लेना ठान लिया।
पा. शि. संस्था में शिक्षा, लाड़ सती से ली दीक्षा।।

गुरुकुल वास रहा सुखकारी, वे पल थे उपकारी जी।
शासन माता के सोमांजी, बन गए बहिर्विहारी जी।
देश प्रदेशों में घूमें, सुन प्रवचन जनता झूमें।।

खुश मिजाज व्यवहार कुशलता, कार्य कुशलता अलबेली।
कमल मुनि की कोमल भगिनी, स्पष्टवादिता कार्यशैली।
अंतिम सेवा वरदाई, नंदनवन में सुखदाई।।

गुरु करुणा के सागर में कर, स्नान स्वयं को शुद्ध किया।
महानगरी में कर अनशन, आत्मा को परम विशुद्ध किया।
भ्राता का शुभ योग मिला, सहगामी सहयोग मिला।।

लयः मेहंदी रची थारै हाथां में

थे तो जीवन धन्य बणायो

● साध्वी मधुरेखा ●

दीपै संथारो -3

शासनश्री संबोधन पायो।
थे तो जीवन धन्य बणायो।
मनोरथ तीजो सफल करायो।।

मानव रतन मिल्यो ओ भारी।
बैदां रै खिलगी केशर क्यारी।
छः भायां री भगिनी थे सुखकारी।।

प्रमुखा लाडांजी रै हाथां दीक्षा।
चैन्नई स्यूं गुरुवर भेजी शिक्षा।
निज री करता रह्या समीक्षा।।

सुधा स्यूं सोमलता कहलाया।
किरपा आचार्यां री पाया।
यात्रावां कर थे मोद मनाया।।

कमल मुनि रो योग मिल्यो मनहारी।
थांरी खिलगी मन फुलवारी।
महाश्रमण रा हां आभारी।।

लयः धरती धोरां री

मोत्यां सी उजली थांरी साधना

● साध्वी पुण्ययशा ●

शासनश्री सोमलताजी, अनशनकर जीती बाजी।
मोत्यां सी उजली थांरी साधना।।

रतन केशर मात-पिता गंगाणै में जनम्या थे।
जीवन उजाल्यो संयम धार थे।।

अजब-गजब सी सहनशीलता रह्या सोम सम निर्मल थे।
कर्मां रा बंधन तड़-तड़ तोड़िया।।

मधुर आपकी प्रवचन शैली गीत कला बेजोड़ ही।
गुरुनिष्ठा संघभक्ति अणपार ही।।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल आपका है भ्राता।
अंतिम क्षण दियो आपनै साझ है।।

शकुंतलाश्रीजी संचित जागृत रक्षित रो योग हो।
तन कपड़ो बण सेवा साजी सांतरी।।

भागी सौभागी हां आपां भैक्षव शासन पायां हां।
महातपस्वी महाश्रमण सिर हाथ है।।
दादर में च्यार तीर्थ रा ठाठ है।।

लयः तेजा

कमाल थी आपकी सौम्यता और सहजता

बेमिसाल थी आपकी समता और सहिष्णुता,
कमाल थी आपकी सौम्यता और सहजता,
लाजवाब थी आपकी पापभीरुता और निर्मलता,
याद आयेगी आपकी प्रवचन पटुता और गायन कला।

उग्रविहारी तपोमूर्ति की भगिनीः

आप धन्य थे कृत्पुण्य थे जो उग्रविहारी मुनिश्री कमलकुमारजी स्वामी की सेवा सन्निधि में आपने संथारा ग्रहण किया । आपने तपोमूर्ति मुनिराज का नाम सदा रोशन किया था। मेरा भी सौभाग्य है कि आप मेरे ननद महाराज थे।

विलक्षण गुरु कृपा का अंदाजः

समग्र धर्मसंघ ने वसंत पंचमी के दिन अद्भुत गुरु कृपा का राज देखा जब पूज्य प्रवर ने संदेश प्रदान कराया । साध्वी सोमलताजी को सेवा की दुर्लभ सन्निधि के पुण्य क्षण प्रदान कराने हेतु कमल मुनिराज को आपके पास भिजाया।

महान गुरु महान संघः

हमारा संघ महान है। हमारे गुरुदेव महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी महान है। जिनकी सारे जहान में पहचान है। शासनश्री साध्वी सोमलताजी गुरुदेव के अनुग्रह ऊर्जावान थे।

सद्गुणों की सौरभः

रतनलालजी केसर देवी का बैद परिवार, अद्भुत है जिन्हें सद्गुणों की सौरभ, साध्वी सोमलताजी मिली। बैद परिवार के संस्कारों की सौरभ आपको जन्मघूंटी के साथ मिली। आपने तन मन वचन की सम्पदा से बैद परिवार का गौरव सहस्रगुणित किया ।

मुम्बई मायानगरी महिमामंडितः

मायानगरी मुम्बई एक औद्योगिक नगरी है। इस महिमामंडित महानगर में आपने जिन शासन तेरापंथ शासन का मॉल खोला। त्याग, तप, संयम, साधना के अनमोल रत्न हजारों श्रावक-श्राविकाओं को अपनी हंसती, मुस्कुराती मनमोहक मुद्रा से खुले हाथों बांटे। जो भी आपके पास दर्शनार्थ आया वह आप से प्रभावित हो गया।

सेवाभावी साध्वी परिवारः

गुरुकृपा से आपको सेवाभावी साध्वी परिवार मिला। आपकी सरलता, ऋजुता, मृदुता, पवित्रता, पावनता, निर्मलता, जागरूकता की दौलत को जिन्होंने प्राप्त किया।

मेरा सौभाग्य महाभाग्यः

मुझे बैद परिवार गंगाशहर से जुड़ने का स्वर्णिम अवसर मिला। मुनि कमलकुमारजी, साध्वी सोमलताजी एवं मैं (साध्वी विनम्रयशा) शासन में सम्मिलित हुए इसका गर्व और गौरव हमेशा रहेगा। जब भी गुरुचरणों में जाते साध्वीश्री की सेवा का अवसर मिलता । साध्वीश्री मुझे आहार करने बुलाते। गीत गायन के साथ मुझे पहुंचाने पधारते। हम उनके लिए उपहार लेकर जाते वे मेरे लिए उपहार लेकर आते के साथ मुझे पहुंचाने पधारते । वे मधुर क्षण आज भी यादों में छाए हैं। सदा स्वर्णिम पल शासन का गौरव बढ़ाते रहें। आज महाशिवरात्रि दिवस, महिला दिवस आपकी तपस्विता से सौम्य बन गया।

– डॉ. साध्वी परमयशाजी के निर्देशानुसार साध्वी विनम्रयशा (भाभी महाराज) एवं साध्वी वृंद

ज्यों-की त्यों धर दीन्हि चदरिया

जिनका जीवन पानी की तरह निर्मल, गतिशील, फेन की तरह उज्जवल, पवित्र, शशांक की तरह तेज चाल, खिलते पुष्प सी चेहरे की मुस्कान, गोरख विद्या से सम्मोहित करने वाले मधुर वचन और कबीरजी के शब्दों में 'ज्यों-की त्यों धर दीन्हि चदरिया' की कहावत को आत्मसात करने वाली एक दिव्य आत्मा-शासनश्री साध्वी सोमलताजी महाराज। अपनी साधनारूपी सुरभि से सबको सुंगधित कर और साधु का अन्तिम मनोरथ स्वीकार कर सदा-सदा के लिए इस दुनिया से विदाई ले ली। इतिहास पुरुष, नवसृजनकर्ता आचार्यश्री तुलसी के निर्देशानुसार साध्वी प्रमुखाश्री लाडांजी के कर कमलों से संयमरत्न ग्रहण कर, ग्यारह वर्षों तक गुरुकुलवास का दुर्लभ अवसर प्राप्त कर, स्वयं का जीवन धन्य बनाया। श्रद्धा के रंग से रंगा हुआ, प्रमोद भावना से मुखरित, सेवाभावना से युक्त साध्वीश्री का जीवन हम सभी साध्वियों के लिए प्रेरणासोत था।

ई.सन् 2020 में 'शासनश्री' साध्वी पद्मावतीजी और 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी का एक महीने का प्रवास, सहवास वह मधुर यादें एवं दूध-पानी की तरह घुलनसार स्वभाव हृदयरूपी स्लेट पर हमेशा के लिए अंकित हो गया। अंतिम समय में शारीरिक अस्वस्थता बहुत होते हुए भी दृढ़ मनोबल का परिचय दिया। संकल्पशक्ति के साथ स्वयं ने ही तेले का प्रत्याख्यान कर वीरता का परिचय दिया। सहवर्तिनी सभी साध्वियों के सहयोग से एवं तपोमूर्ति भाई महाराज मुनि कमल कुमार जी के योग से मंदिर के गुंबज की तरह संयम को शिखर चढ़ाया एवं शीघ्र ही अपने मनोरथ को साकार, सिद्ध कर लिया।

आदरणीया साध्वी शकुन्तला जी महाराज, साध्वी संचितयशाजी, साध्वी जागृतप्रभाजी, साध्वी रक्षितयशाजी अग्लान भाव से सेवाकर शासनश्रीजी की चित्त समाधि, संयम में सहयोगी तो बनी है पर संघ प्रभावना का भी कार्य किया है। सेवा भावना की जितनी अनुमोदना करें उतनी कम है। अग्रणी ऋण से यात्किंचित उऋण होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सभी साध्वियां इस विषम परिस्थिति को धैर्य के साथ सहन कर चित्त समाधि रखें। यही मंगलकामना।

– साध्वी गवेषणाश्री आदि साध्वी वृन्द

'नाणागमो मच्चु मुहस्स अत्थि'

मृत्यु आने के अनेक रास्ते हैं। 'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी का संथारे में देहावसान हो गया। साध्वी सोमलताजी वर्षों से व्याधि से जूझ रही थी, पर आपका मनोबल ऊंचा था, आप दाठीक, उत्साही, कष्ट सहिष्णु एवं विदुषी साध्वी थी। आपने पूर्वांचल, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों की यात्रा कर संघ की अच्छी प्रभावना की। साध्वी सोमलताजी मेरी सह-पाठिनी थी। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में एक साथ प्रवेश किया। संस्था का चार वर्ष का पाठ्यक्रम पूरा कर हम दोनों दीक्षित हुई। दीक्षा लेने के बाद भी 'शासनश्री' साध्वी कमल श्री के ग्रुप में हम दोनों तीन साल साथ रही। उनकी व्याख्यान कला, जोड़ कला बेजोड़ थी।

आप बड़ी सौभाग्यशालिनी थी कि मुंबई में गुरुदेव के दर्शन तथा चातुर्मास का अनुपम योग मिला। भाई कमल मुनि का भी अच्छा योग मिला। 2023 का होली चातुर्मास हमने चेम्बूर में साथ में किया। वह प्रवास हमको बार-बार याद आ रहा है। साध्वी शकुन्तलाजी, साध्वी संचितयशाजी, साध्वी जागृतयशाजी तथा साध्वी रक्षितयशाजी सभी साध्वियों ने पूरे मनोयोग से व तन का कपड़ा बन कर सेवा की। साध्वी सोमलताजी की आत्मा जहां भी हो, जल्दी से जल्दी मोक्ष की ओर अग्रसर हो. यही मंगल कामना।

– 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा आदि साध्वी वृंद

रक्तदान शिविर का आयोजन

पालघर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद पालघर एवं कच्छ युवा संघ द्वारा ऑर्चिड हॉल, पालघर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान शिविर की शुरुआत मंगल मंत्रोच्चार से की गई। तेयुप टीम और कच्छ युवा संघ के प्रयास से कुल 70 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। रक्तदान शिविर में पालघर के नगरसेवक, विविध व्यापारी संगठन के पदाधिकारी व शहर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थिति दर्ज कराई । तेयुप अध्यक्ष प्रदीप सिंघवी ने बताया कि हमारी संस्था स्थानीय स्तर पर ऐसे कई सेवा के कार्यों को समय-समय पर करती आ रही है। तेयुप मंत्री जयेश राठौड़ ने बताया कि हम आगे भी मानव सेवा के लिए तत्पर रहते हुए रक्तदान शिविरों का आयोजन करते रहेंगे। रक्तदान शिविर के आयोजन में तेयुप, किशोर मंडल एवं कच्छ युवा संघ का विशेष श्रम रहा।

संक्षिप्त खबर

कैंसर जागरूकता शिविर का आयोजन

नालासोपारा, मुंबई। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल नालासोपारा द्वारा कैंसर जागरूकता शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की सामूहिक शुरुआत उपासिका मंजू बाफना, लक्ष्मी मेहता, प्रेमा धाकड़ के द्वारा नमस्कार महामंत्र द्वारा की गई। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत की सुंदर प्रस्तुति दी गई। संगठन मंत्री रंजना सोलंकी ने स्वागत वक्तव्य दिया। मुख्य अतिथि के रूप में तेरापंथ महिला मंडल नालासोपारा की सदस्य डॉ. अंकिता कर्णावत ने महिलाओं में होने वाले कैंसर के कारण, लक्षण व बचाव के तरीके को विस्तार से समझाया एवं सभी की जिज्ञासाओं का समाधान किया। हमारा शरीर स्वस्थ रहे इसलिए नियमित जांच करवाने की सलाह दी। इस अवसर पर महिला मंडल की बहनों द्वारा डॉ. अंकिता कर्णावत को शिक्षा एवं समाज में योगदान के लिए सम्मानित किया गया। आभार ज्ञापन महिला मंडल मंत्री प्रवीणा खाब्या ने किया। कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही एवं कन्याओं का भी सहयोग रहा।

सीपीएस कार्यशाला का उद्घाटन

औरंगाबाद। तेरापंथ युवक परिषद् औरंगाबाद द्वारा आयोजित सीपीएस कार्यशाला का उद्घाटन तेरापंथ भवन पान दरीबा रोड में किया गया। तेयुप अध्यक्ष अंकुर लुणिया ने सीपीएस जोनल ट्रेनर तृप्ति कोठारी एवं पधारे हुए सभी महानुभावों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा एवं महिला मंडल अध्यक्षा भावना सेठिया ने भी अपने विचार व्यक्त किये। प्रथम बार आयोजित होने वाली सीपीएस कार्यशाला को लेकर पूरे समाज में गजब का उत्साह है। स्वागत समारोह का कुशल संचालन तेयुप मंत्री मयूर आच्छा ने किया। इस अवसर पर तेयुप, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम आदि संस्थाओं के पदाधिकारी, स्थानीय सीपीएस प्रभारी मुदित मरलेचा आदि उपस्थित रहे।

भक्तामर स्तोत्र का अनुष्ठान

राउरकेला। स्थानीय तेरापंथ भवन में समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी, समणी सुमनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में भक्तामर स्तोत्र का अनुष्ठान रिद्धि - सिद्धि मंत्रों सहित करवाया गया। समणीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ अनुष्ठान प्रारंभ हुआ।

सभी ने भक्तामर के श्लोकों का उच्चारण किया। समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी ने भक्तामर स्तोत्र की विशेषताओं का उल्लेख किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **साउथ हावड़ा।** कालू निवासी विजयवाड़ा प्रवासी सुरेन्द्र-वीना गोलछा के सुपौत्र एवं अंकित-सीमा गोलछा के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से हुआ। संस्कारक बजरंग लाल डागा एवं पवन बेंगाणी ने कार्यक्रम संपादित करवाया। पारिवारिक जनों ने बालक का नाम अर्नित रखा। परिषद् के सह मंत्री सुनीत नाहटा ने शिशु के मंगल भविष्य की मंगलकामना की।

अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह

'नैतिकता का शंखनाद' विषय पर आयोजित कार्यक्रम

गुलाब बाड़ी।

'शासनश्री' साध्वी धनश्री जी एवं सहवर्ती साध्वीवृंद के सानिध्य में तेरापंथ भवन गुलाबबाड़ी में अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह मनाया गया।

'नैतिकता का शंखनाद' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में 'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट' के राष्ट्रीय पुरस्कार के प्रथम विजेता टीम सर पदमपत सिंघानिया स्कूल कोटा के छात्रों द्वारा 'असली आजादी अपनाओ' गीत एवं द्वितीय राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता टीम बख्शीज स्प्रिंगडेल्स स्कूल के छात्रों ने 'अणुव्रत गीत' का संगान किया गया।

इस अवसर पर साध्वी धनश्रीजी ने बताया कि अणुव्रत एक ऐसा आंदोलन है जिसका उद्देश्य जीवन में नैतिकता लाकर सत्य और अहिंसा के द्वारा विश्व शांति के लिए वातावरण का निर्माण करना है।

अणुव्रत गिरते नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने का प्रकल्प है। जिस प्रकार अणु का एक कण पूरे ब्रह्मांड में विस्फोट कर सकता है, वैसे ही अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम हर समस्या को सुलझा सकते हैं।

इस अवसर पर साध्वी शीलयशा जी ने कहा कि अणुव्रत के तीन कार्य हैं- पहला व्यक्ति को चरित्रवान बनाना, दूसरा व्यवहार की शुद्धि करना तथा तीसरा विभिन्न धर्मों में समन्वय करना। अणुव्रत जीवन का आधार और दर्शन है तथा जीवन को ऊंचाईयों तक पहुंचाने का माध्यम है। अणुव्रत एक आचार संहिता ही नहीं सम्पूर्ण जीवन शैली है। यह व्यक्ति की नैतिक चेतना का जागरण करती है। साध्वी सलिलयशा जी एवं साध्वी विदितप्रभा जी ने भी भावनात्मक प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रवि बुच्चा ने बताया कि राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी द्वारा प्रतिपादित इस आंदोलन के 75 वर्ष पूर्ण होने पर देशभर में अणुव्रत के द्वारा लोगों की नैतिक चेतना जागृत करने व अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्पों को जन-जन तक पहुंचाने हेतु वर्ष पर्यन्त अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

अणुव्रत एक आचार संहिता ही नहीं सम्पूर्ण जीवन शैली है।

कार्यक्रम का संचालन भूपेंद्र बरड़िया ने किया। इस अवसर पर सकल ओसवाल समाज के उपाध्यक्ष महेंद्र कांकरिया व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

जवाहर चौपड़ा ने आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया।

तेरापंथ भवन का हुआ शुभारंभ

पुणे। तेरापंथ भवन, पुणे का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में किया गया। मंगल मंत्र उच्चारण के साथ मंगल भावना पत्रक की जानकारी विस्तार से दी गई। गीत के माध्यम से शुभकामनाएं प्रेषित की गई।

इस अवसर पर साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने कृपा करके मंगल पाठ सुनाया। श्री भिक्षु मेमोरियल फाउंडेशन के सभी पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं समाज के अनेक लोगों की उपस्थिति से कार्यक्रम सफल रहा। सभी ने जैन विधि की सराहना करते हुए संस्कारकों को बहुत-बहुत साधुवाद दिया। संस्कारक के रूप में मनोज संकलेचा, नवीन लालानी, प्रवीण सुराणा, धर्मेंद्र चोरड़िया, हरीश श्रीश्रीमाल, प्रशान्त चोरडिया की भूमिका रही। यह कार्यक्रम तेरापंथ युवक परिषद, पुणे महाराष्ट्र द्वारा आयोजित किया गया।

संबोधि

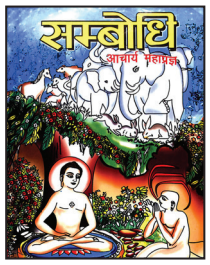

साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

शरीर मुक्ति का बाधक है। मुक्तात्मा का पुनः जन्म नहीं होता। अवतार वही आत्माएं लेती हैं जो सशरीरी हैं। शरीर पांच हैं– औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण। संसारी के दो और तीन शरीर सदा रहते हैं। कुछ आत्माओं में पांच शरीरों की योग्यता भी रहती है। दो शरीर में आत्मा अधिक देर नहीं रहती। उसे तीसरा शरीर शीघ्र ही धारण करना होता है। दो शरीरों का जघन्य कालमान एक समय है, और उत्कृष्ट दो, तीन या चार समय। ये दो सूक्ष्म शरीर अंतराल गति में होते हैं। आत्मा जब एक स्थूल शरीर को छोड़कर दूसरे स्थूल शरीर में प्रवेश करती है, उस गमन को अंतराल गति कहते हैं।

पांच शरीरों का स्वरूप–वर्णन

औदारिक शरीर

जो शरीर स्थूल पुद्गलों से निष्पन्न होता है वह औदारिक शरीर है। वैक्रिय आदि चारों शरीर सूक्ष्म, सूक्ष्मतर पुद्गलों से बने हुए होते हैं। औदारिक शरीर आत्मा से अलग हो जाने के बाद भी टिक सकता है। परन्तु वैक्रिय आदि शरीर आत्मा के अलग होते ही बिखर जाते हैं। औदारिक शरीर का छेदन–भेदन किया जा सकता है, परन्तु अन्य शरीर में छेदन–भेदन संभव नहीं। मोक्ष की प्राप्ति भी सिर्फ औदारिक शरीर से ही हो सकती है। औदारिक शरीर में हाड़, मांस, रक्त आदि होते हैं और इनका स्वभाव भी गलना, सड़ना, विनाश होना है।

वैक्रिय शरीर

जो शरीर छुटपन, बड़प्पन, सूक्ष्मता, स्थूलता, करूप, अनेक रूप आदि विविध क्रियाएं करता है, वह वैक्रिय शरीर है। जिस शरीर में हाड़, मांस, रक्त न हो तथा जो मरने के बाद कपूर की तरह उड़ जांए, उसको वैक्रिय शरीर कहते है ।

आहारक शरीर

चतुर्दश–पूर्वधर मुनि आवश्यक कार्य उत्पन्न होने पर जो विशिष्ट पुद्गलों का शरीर बनाते हैं, वह आहारक शरीर है।

तैजस शरीर

जो शरीर आहार आदि के पचाने में समर्थ है और जो तेजोमय है वह तैजस शरीर है। इसे वैद्युतिक शरीर भी कहा जाता है।

कार्मण शरीर

ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों के पुद्गल समूह से जो शरीर बनता है, वह कार्मण शरीर है।

तैजस और कार्मण शरीर–ये दोनों सूक्ष्म शरीर हैं। आत्मा के साथ इनका अनादि–संबंध है। औदारिक शरीर जन्म–संबंधी है। वैक्रिय शरीर जन्म संबंधी और लब्धिजन्य भी होता है। आहारक शरीर योग–शक्तिजन्य होता है।

ये तीनों शरीर सांगोपांग होते हैं। ये स्थूल शरीर हैं। स्थूल शरीर से मुक्त हो जाने पर आत्मा मुक्त नहीं होती है। आत्मा की मुक्ति तब होती है जब सूक्ष्म शरीर भी छूट जाते हैं। सूक्ष्म कार्मण शरीर से ही आत्मा स्थूल शरीर का निर्माण कर लेती है। 'कारणे सति कार्योत्पत्ति'–कार्य कारण के बिना उत्पन्न नहीं होता। सूक्ष्म शरीर न हो तो स्थूल शरीर कैसे हो सकता है? इसलिए एक शरीर से दूसरे शरीर के प्रवेश की कठिनाई नहीं रहती। आत्मद्रष्टा स्थूल शरीर को नहीं मिटाना चाहता, वह चाहता है मूल को उखाड़ना। जन्म और मृत्यु का मूल है सूक्ष्म –शरीर। सूक्ष्म शरीर का मूलोच्छेदन तब ही होता है जबकि आत्मा पूर्ण–संयम (निरोध) की स्थिति में पहुंच जाती है।

शरीर के तीन वर्ग हैं –

- स्थूल शरीर–औदारिक शरीर–हाड़–मांस का शरीर ।
- सूक्ष्म शरीर–वैक्रिय शरीर–नाना रूप बनाने में समर्थ शरीर ।
  आहारक शरीर–विचार–संवाहक शरीर ।
- सूक्ष्मतम शरीर–तैजस शरीर–तापमय शरीर ।
  कार्मण शरीर–कर्ममय शरीर।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

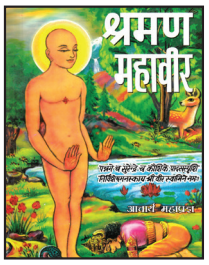

स्वतन्त्रता का संकल्प

(पिछला शेष)

'मैं यह कब कहता हूं कि नहीं कर सकता। मैं यह कहना चाहता हूं कि जो व्यक्ति स्वतंत्रता की लौ को अखंड रखना चाहता है, उसे एक घर का विसर्जन करना ही होगा। वह विसर्जन, मेरी दृष्टि में, सब घरों को अपना घर बना लेने की प्रक्रिया है।'

'तुम महावीर को एकांगिता के आदर्श में क्यों प्रतिबिम्बित कर रहे हो, देव!'

मैं इस आरोप को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हूं। मैंने एक क्षण के लिए भी यह नहीं कहा कि गृहवासी मनुष्य स्वतंत्रता की खोज और उसका अनुभव नहीं कर सकता। मैं उन लोगों के लिए घर का विसर्जन आवश्यक मानता हूं, जो सबके साथ घुल-मिलकर उन्हें स्वतंत्रता का देय देना चाहते हैं। जहां तक मैं समझ पाया हूं, महावीर ने इसीलिए स्वतंत्रता के संकल्प की सार्वजनिक रूप से घोषणा की थी।

'वह घोषणा क्या थी?'

'महावीर ने ज्ञातखंड उद्यान में वैशाली के हजारों-हजारों लोगों के सामने यह घोषणा की, 'आज से मेरे लिए वे सब कार्य अकरणीय हैं जो पाप है।'

'पाप आन्तरिक ग्रन्थि है। महावीर ने उसका आचरण न करने की घोषणा की। इसमें घर के विसर्जन की बात कहां है?'

'पाप को तुम एक रटी–रटाई भाषा में क्यों लेते हो? क्या परतंत्रता पाप नहीं है? वह सबसे बड़ा पाप है और इसलिए है कि वह सब पापों की जड़ है। महावीर की घोषणा का हृद यह है मैं ऐसा कोई कार्य नहीं करूंगा जो मेरी स्वतंत्रता के लिए बाधा बने।'

महावीर ने स्वतंत्रता का अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् यह कभी नहीं कहा कि सब आदमी घर छोड़कर जंगल में चले जाएं। उन्होंने उन लोगों के लिए इसका प्रतिपादन किया जो सब सीमाओं से मुक्त स्वतंत्रता का अनुभव करना चाहते हैं।

'महावीर ने केवल घर का ही विसर्जन नहीं किया, धर्म-सम्प्रदाय का भी विसर्जन किया था। भगवान् पार्श्व का धर्म-सम्प्रदाय उन्हें परम्परा से प्राप्त था, फिर भी वे उसमें दीक्षित नहीं हुए। महावीर ने दीक्षित होते ही संकल्प किया-मेरी स्वतंत्रता में बाधा डालने वाली जो भी परिस्थितियां उत्पन्न होंगी, उनका में सामना करूंगा, उनके सामने कभी नहीं झुकूंगा। मुझे अपने शरीर का विसर्जन मान्य है, परतंत्रता का वरण मान्य नहीं होगा।'

प्रबुद्ध अनन्त की ओर टकटकी लगाए देख रहा था। वह जानता था कि शून्य को भरने के लिए महाशून्य से बढ़कर कोई सहारा नहीं है।

पुरुषार्थ का प्रदीप

एक विद्यार्थी बहुत प्रतिभाशाली है। उसने पूछा, 'मनुष्य के जीवन का उद्देश्य क्या है?'

मैंने कहा, 'उद्देश्य जीवन के साथ नहीं आता। आदमी समझदार होने के बाद अपने जीवन का उद्देश्य निश्चित करता है। भिन्न-भिन्न रुचि के लोग हैं और उनके भिन्न-भिन्न उद्देश्य हैं।

विद्यार्थी बोला, 'इन सामयिक उद्देश्यों के बारे में मुझे जिज्ञासा नहीं है। मेरी जिज्ञासा उस उद्देश्य के बारे में है जो अंतिम है, स्थायी है और सबके लिए समान है।' क्षण भर अन्तर के आलोक में पहुंचने के पश्चात् मैंने कहा, 'वह उद्देश्य है स्वतंत्रता ।'

यह उत्तर मेरे अन्तस का उत्तर था। उसने तत्काल इसे स्वीकार कर लिया फिर भी मुझे अपने उत्तर की पुष्टि किए बिना संतोष कैसे हो सकता था? मैं बोला, 'देखो, तोता पिंजड़े से मुक्त होकर मुक्त आकाश में विहरण करना चाहता है। शेर को क्या पिंजड़ा पसन्द है? हाथी को जंगल जितना पसन्द है, उतना प्रासाद पसन्द नहीं है। ये सब स्वतंत्रता के अदम्य और शाश्वत ज्योति के ही स्कुलिंग हैं। महर्षि मनु ने ठीक कहा है, 'परतंत्रता में जो कुछ घटित होता है, वह सब दुःख है। स्वतन्त्रता में जो कुछ घटित होता है, वह सब सुख है।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

इन्द्रियविजय और समाधिमरण का प्रयोग

आत्म-स्वरूप की उपलब्धि के लिए आवश्यक है संवर और निर्जरा की साधना। कर्म के प्रवेश का निरोध संवर और पूर्वसंचित कर्म का परिशोधन निर्जरा है। उसके बारह भेद हैं। उनमें प्रथम छह बाह्य तप और शेष आभ्यन्तर तप कहलाते हैं। बाह्य तप मुख्यतया कायसिद्धि और आभ्यन्तर तप मुख्यतया भावविशुद्धि पर आधारित प्रतीत होता है। बाह्य तप का उद्देश्य है आभ्यन्तर तप को पुष्ट करना। बाह्य तप के प्रथम चार भेद अनाहार से संबंधित हैं। उनमें पहला है अनशन। अशन का अर्थ है- भोजन, उसका परित्याग है- अनशन। उसके दो भेद हैं-

1. इत्वरिक

2. यावत्कथिक ।

इत्वरिक अनशन

उपवास से लेकर छह मास तक की तपस्या इत्वरिक अनशन है। भगवान महावीर ने अपने साधना-काल में इस तप का बहुत अधिक प्रयोग किया था। करीब साढ़े बारह वर्षों में एक वर्ष भी उन्होंने आहार नहीं किया। उनके जीवन में बाह्य और आभ्यन्तर दोनों प्रकार के तप का योग था। निर्जल अनाहार तप की प्रकृष्टता और ध्यान के विशिष्ट प्रयोग उनकी साधना के मौलिक अंग थे।

जैन समाज में आज भी तपस्या का अच्छा क्रम चल रहा है। अनाहार के साथ ध्यान, जप, स्वाध्याय आदि का योग होने पर तपोबल प्रबल बन सकता है।

यावत्कथिक अनशन

जैन आगमों में न केवल जीने की कला बतलाई गई है, अपितु 'कैसे मरना' भी सिखाया गया है। सुना है कि विनोबाजी ने एक बार कहा था- मैं जैन धर्म में निर्दिष्ट मृत्युविधि से मरना पसन्द करूंगा और उन्होंने अपनी इच्छा को अन्त में पूर्ण भी किया। मोह-ममता से उपरत होकर समाधिपूर्ण मरण का वरण करना मरने की कला है। आत्म-कल्याण की भावना से यावज्जीवन के लिए आहार का परित्याग करना यावत्कथिक अनशन है। उसकी तैयारी स्वरूप पूर्ण अभ्यास के रूप में क्रमिक तप करना संलेखना कहलाता है। आहार का अल्पीकरण द्रव्य संलेखना और कषाय का अल्पीकरण भाव संलेखना है।

ठाणं सूत्र में श्रमण और श्रमणोपासक के लिए तीन-तीन मनोरथ निर्दिष्ट हैं। उनमें तीसरा दोनों के लिए समान है। वह है-

'कया णं अहं अपच्छिम मारणंतिय सलेहणा-झूसणा-झूसिते भत्तपाण
पडिया-इक्खित्ते पाओवगते कालं अणवकखमाणे विहरिस्सामि?'

'कब मैं अपश्चिम मारणांतिक संलेखना की आराधना से युक्त होकर भक्तपान का परित्याग कर, प्रायोपगमन अनशन स्वीकार कर मृत्यु को आकांक्षा नहीं करता हुआ विहरण करूंगा?'

साधनामय जीवन की परिसम्पन्नता अनशनपूर्वक हो, यह प्रत्येक साधक की मनोकामना रहनी चाहिए, यह पूर्वोक्त सूक्त का तात्पर्य है। इस प्रकार की मंगल भावना भी महान् कर्म-निर्जरा का साधन बनती है और साधक को जागरूक बनाए रखती है।

यावत्कथिक अनशन के तीन प्रकार

यावत्कथिक अनशन के तीन प्रकार हैं-

1. भक्त-प्रत्याख्यान

2. इंगिणि (इंगित) मरण

3. प्रायोपगमन।

1. भक्त-प्रत्याख्यान अनशन करने वाला आहार का परिहार करता है। वह अपनी शारीरिक परिचर्या में दूसरों का सहयोग भी स्वीकार करता है।

2. इंगिणी मरण अनशन। यह भक्त प्रत्याख्यान से उच्चतर है। इसे अतिशय ज्ञानी (कम से कम नव पूर्वधर) और संयमी भिक्षु ही स्वीकार करते हैं। आगमों के एक वर्गीकरण का नाम पूर्व है। वे संख्या में चौदह थे, उनमें विशाल श्रुतज्ञान संकलित था। वर्तमान में वे उपलब्ध नहीं हैं। इस अनशन में भिक्षु सीमित स्थान में स्वयं उठना, बैठना या चंक्रमण कर सकता है। किन्तु उठने, बैठने और चंक्रमण करने में दूसरे का सहारा मनसा, वाचा, कर्मणा न लेना, न लिवाना और न लेने वाले का अनुमोदन करना उसका नियम होता है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनिश्री पीथलजी 'छोटा' (केलवा) दीक्षा क्रमांक : 72

मुनिश्री तपस्वी संत थे। स्फुटकर अनेक थोकडे. आपने किये। ऊपर में एक मास तथा दो मास तक का तप किया। इसके अतिरिक्त आपने 45 दिन का तप, 36 दिन का तप और किया। आपका साधना काल मात्र छः वर्ष का रहा।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

टीपीएफ द्वारा मेधावी सम्मान एवं नॉर्थ जोन का संपर्क कार्यक्रम आयोजित

हेल्थी लिविंग हेप्पी लाइफ का मूल मंत्र

नोएडा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में बोथरा-भवन के सुरम्य प्रांगण में टीपीएफ नार्थ जोन के तत्वावधान में एवं टीपीएफ नोएडा के आयोजन में दिल्ली, एन.सी.आर. टीपीएफ का संपर्क कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वीश्री ने 'हेल्थी लिविंग, हेप्पी लाइफ' विषय पर सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि टीपीएफ हमारे धर्मसंघ की मोतियों की माला है। एक-एक टीपीएफ, सदस्य माला का अनमोल मोती है। ये मोती हमारे धर्मसंघ को आभामंडित बना रहे हैं। टीपीएफ सदस्य अपनी बीजी लाइफ को हेप्पी लाइफ बनाएं। साध्वीश्री ने कहा- हेप्पी लाइफ जीने के लिए हम अपने भाव, स्वभाव, आहार-विहार एवं व्यवहार को सम्मुन्नत बनाए। जैसा हम आहार करते हैं वैसे ही हमारे शरीर में न्यूरोट्रांसमीटर बनते है एवं ये न्यूरोट्रांसमीटर ही हमारे व्यवहार का संचालन करते है। हमारा सुन्दर व्यवहार ही हमारी जिन्दगी को खुशहाल बनाता है।

के सी जैन ने 'रहस्य श्वास के' विषय पर सारगर्भित प्रस्तुति देते हुए कहा - श्वास पर हमारी जिन्दगी टिकी हुई है। जितना लम्बा श्वास, उतनी ही लम्बी जिन्दगी।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा- जीवन को खुश रखने के लिए हमेशा दिमाग में शांति का चैनल चलाओ। दिमाग को माचिस की तिल्ली नहीं, ठंडे जल का झरना बनाओ।

संपर्क कार्यक्रम के तहत नेटवर्किंग व कनेक्ट कार्यक्रम में अत्यंत ही रोचक तरीके से उपस्थित सभी सदस्यों ने अपना व्यक्तिगत व व्यावसायिक परिचय सभी के साथ साझा किया।

कार्यक्रम का संचालन आरती कोचर ने किया। इस अवसर पर टीपीएफ नोएडा ने मेधावी छात्र सम्मान का कार्यक्रम रखा। मेधावी बच्चों को मेडल पहनाकर सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री निलेश जैन ने किया।

साइबर अपराध-अपनी सुरक्षा, अपने हाथ

पालघर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम पालघर द्वारा 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, पालघर में 'साइबर अपराध - अपनी सुरक्षा, अपने हाथ' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा 'नमस्कार महामंत्र' के साथ हुई। साध्वीश्री ने ज्ञान के विभिन्न रूपों और व्यक्तिगत व सामाजिक विकास में इसकी अपरिहार्य भूमिका पर सारगर्भित वक्तव्य दिया। एडवोकेट हेतल बाफना ने मंगलाचरण किया एवं जयेश राठौड़ ने उपस्थित सभी लोगों का हार्दिक स्वागत किया। विक्रम बाफना ने मुख्य वक्ता एडवोकेट पंकज बाफना का परिचय देते हुए उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

पंकज बाफना ने विभिन्न प्रकार के साइबर अपराधों के बारे में जानकारी देते हुए श्रोताओं को लक्ष्यीकरण, उत्पीड़न के तरीकों और महत्वपूर्ण एहतियाती उपायों के बारे में बताया। वास्तविक जीवन के उदाहरणों से प्रेरणा लेते हुए, उन्होंने साइबर खतरों से निपटने में जागरूकता और सक्रिय उपायों के महत्व को रेखांकित किया। उपस्थित सभी को मिशन 1313-आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना की जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम में टीपीएफ पालघर के अध्यक्ष अंकित डांगी एवं पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अमर बाफना द्वारा सभी प्रतिभागियों को उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए आभार ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम का संचालन गजसुख बोराना द्वारा किया गया।

आध्यात्मिक मिलन से हुआ गुणोत्कीर्तन

वाशी, मुंबई ।

'उग्रविहारी तपोमूर्ति' मुनि कमलकुमारजी एवं 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। मुनिश्री ने कहा - 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी द्वारा मेरी संसारपक्षीय सहोदरी साध्वी सोमलताजी को दीक्षा के दिन से ही कुशल मार्गदर्शन मिला, साध्वी जीवन के गहरे संस्कार प्राप्त हुए, उसी का परिणाम था कि साध्वी सोमलताजी भी साधना में उत्तरोत्तर बढ़ती हुई 'शासनश्री' बनी। उन्होंने भी आपकी तरह सुंदर प्रांतों की सफल यात्राएं कर धर्मशासन की गौरव वृद्धि की। मुनिश्री ने गुरुदेव श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी, आचार्यश्री महाश्रमणजी, साध्वीप्रमुखा लाडांजी, शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी, साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी और साध्वी वर्याजी की विशेष कृपा का उल्लेख किया।

'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि साध्वी सोमलताजी साध्वीप्रमुखा लाडांजी के कर कमलों से दीक्षित होने वाली एकमात्र साध्वी थी। साध्वी सोमलजाजी ने दीक्षित होकर अच्छी अर्हता प्राप्त की, प्रवचनकार, गीतकार, रचनाकार साध्वी बनी। उनकी मिलनसारिता, गुण ग्राहकता सदैव स्मृति पटल पर रहेगी। जीवन के अंतिम समय में गुरु दर्शन ही नहीं, गुरुदेव के साथ चतुर्मास का योग भी मिल गया, अनेक साधु साध्वियों से मिलना हो गया।

अंत में अपने सहोदर मुनि से संथारा करके देह का परित्याग किया। उनकी सहयोगी साध्वियों ने उनकी हर तरह से सेवा कर उन्हें समाधि पहुंचाई, देखकर-सुनकर प्रसन्नता हुई।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा

वर्ष 2024 हेतु नवीन घोषित चातुर्मास

साध्वी कनकश्री जी : विद्यानगर, जयपुर
साध्वी मधुरेखा जी : श्याम नगर, जयपुर
साध्वी मंगलप्रभा जी : मालवीय नगर, जयपुर
साध्वी मंगलप्रज्ञा जी : कांदिवली, मुंबई

अभिवंदना के स्वरों में एक स्वर आपका भी

युगप्रधान शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर करें अपने लेखन से अभिवंदना

परम पूज्य युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के

50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता, 63वें जन्म दिवस, 15वें पदाभिषेक दिवस

के उपलक्ष में वंदनीय चारित्रात्माओं एवं पाठकगण की स्वरचित रचनाएं सादर आमंत्रित है।

- आप अपनी रचना आलेख (अधिकतम 300 शब्द) / कविता (अधिकतम 15 पंक्ति) / गीत (अधिकतम 5 पद्य/ 15 पंक्ति) / स्केच के रूप में भिजवा सकते हैं।
- कृपया एक व्यक्ति एक ही रचना भिजवाएं।
- आप अपनी रचना टाइप करवा कर या पीडीएफ फॉर्मेट में 15 अप्रैल 2024 तक **abtyptt@gmail.com** पर ईमेल करवा सकते हैं।
- प्रकाशन का सर्वाधिकार संपादक के पास सुरक्षित रहेगा।

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

❖ अव्यवस्थित दस काम करने की अपेक्षा दो-तीन व्यवस्थित काम करना ज्यादा लाभदायी हो सकता है।
-आचार्य श्री महाश्रमण

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

'शासनश्री' साध्वीश्री पानकुमारीजी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्‌गार

सतयुग की सती प्रतीत होती थी साध्वी श्री पानकुमारीजी 'द्वितीय'

पहली नजर में ही जिनके भीतर सतयुग की सती के दर्शन प्रतीत होते थे ऐसी साध्वी थी शासनश्री साध्वी पानकुमारी जी 'द्वितीय'। जिनकी उपासना में आने वाला हर व्यक्ति शांति का अनुभव करता था। मैं अपना सौभाग्य ही मानूंगा कि मुझे बचपन से ही अनेकों बार उनके दर्शनों का लाभ मिला। दीक्षा के बाद भी जब भी मिलना होता तब अनेक शिक्षाएं फरमाते थे। अंतिम बार उनकी सेवा-उपासना का अवसर मुझे सन 2014 में गंगाशहर में मिला था। तब शिक्षा प्रदान करते आपने फरमाया था- 'हमारे संयम की चादर पवित्र बनी रहनी चाहिए। गुरु दृष्टि की अखंड आराधना करनी है। मंत्री मुनिश्री की सेवा खूब करना है, उनसे ज्ञान प्राप्त करना है। उनका आशीर्वाद तुम्हें जीवनभर आगे बढ़ायेगा।'

'शासनश्री' साध्वी पानकुमारी जी की उपासना के सौभाग्य में मुख्य निमित्त थे मेरे संसारपक्षीय बुआ दादी साध्वी मूलांजी व बुआ साध्वी मंगलयशाजी। साध्वी मूलांजी का उनके साथ लगभग 72 वर्षों का साहचर्य रहा। कहा जाता था कि एक आत्मा दो देह हैं। साध्वी मंगलयशाजी को भी अंतिम समय तक उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ है। 'शासनश्री' की सेवा में अभी कुछ समय पूर्व एक भाई सूरत से गया था तब आपने फरमाया था कि अनंत मुनि को कहना कि साध्वी मंगलयशाजी तो मेरा आयुष्य बढ़ा रही है, अग्लान भाव से मेरी सेवा करती है। पिछले दो वर्षों में मेरी संसार पक्षीय ज्येष्ठ भगिनी साध्वी मुक्तिश्री को भी उनकी सेवा व सान्निध्य प्राप्त हो रहा था। अन्य सहवर्ती साध्वियां साध्वी अपूर्वयशाजी, साध्वी भास्करप्रभाजी, साध्वी सौम्यप्रभाजी को भी अंतिम सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

अभी-अभी गुरु निर्देश से मुझे मुंबई की ओर विहार करना था तब भाई द्वारा पूछने पर उन्होंने अपनी अनुभव प्रणव सिद्धवाणी से फरमाया था कि अमुक-अमुक जप करके यह कार्य करके वहां से प्रस्थान करना सब प्रकार से निर्विघ्नता रहेगी। मैंने वैसे ही किया और मुझे अनुकूलता ही अनुकूलता प्राप्त होती रही।

जब गुरुदेव ने मुझे कच्छ की तरफ विहार का निर्देश प्रदान करवाया तब भी मुझे समाचार मिले कि 'शासनश्री' साध्वी पानकुमारीजी ने मेरे लिए फरमाया है कि गुरुदेव ने बड़ी कृपा करवाई है। गुरुदेव अगले वर्ष मर्यादा महोत्सव करने कच्छ-भुज की भूमि पर पधार रहे हैं। बड़े अच्छे से कार्य करना है। मंत्री मुनिश्री के नाम को आगे बढ़ाना है। अपनी मातृभूमि का ऋण चुकाना है।

मुझ पर सतत् स्नेह बरसाने वाली 'शासनश्री' साध्वी पानकुमारीजी 'द्वितीय' की शिक्षाओं को जीवन में अपनाऊं और उनके जीवन के गुण सहजता, सरलता, पवित्रता आदि मेरे में भी अवतरित हो, यह स्वयं के लिए भावना भाता हूँ। उनकी आत्मा शीघ्र अपने मंजिल को प्राप्त करे, यह मंगलकामना करता हूं।

– मुनि अनंत कुमार

'पान' सतीवर का उपकार

● साध्वी प्रबुद्धयशा ●

जिनकी प्रेरक वाणी से, जागे संयम संस्कार।
'पान' सतीवर का उपकार।
जिनके पावन पावस में वैराग्य बना साकार।
'पान' सतीवर का उपकार।।

गण गणपति से गहरी प्रीति, मुखरित रहती गुरु गुणगीति।
कहती गुरुवर है जीवनधन, तेरापथ यह है नन्दनवन।
जन्मों की पुण्याई जागी, पाया गण मंदार।।

घो. चि. पू. लि. चारों समझाती, कण्ठीकरण कला सिखलाती।
बातें उनको नहीं सुहाती, करने पर झट आंख दिखाती।
बातेरी की सदा बिगड़ती, सीख बनी सुखकार।।

ज्ञान ध्यान में रही निरंतर, तत्त्वज्ञान गहराई भीतर।
सहज सुघड़ व्यवहार कुशलता, अद्भुत देखी समता-क्षमता।
वृद्धावस्था बनी शुभंकर पा आगम आधार।।

संयम रक्षा का प्रण अविचल, झुका न पाई तन की हलचल।
मनोबली वे आत्मबली थी, लाड़-प्यार में भले पली थी।
श्रमलीला स्वाध्याय प्रेमिका निर्मल पंचाचार।।
वैरागी भाई बहिनों को खूब किया तैयार।।
स्मृतियों के दर्पण में वह मूरत लेती आकार।।

लय : कितना बदल गया इंसान

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्‌गार

हमारे धर्मसंघ की विशिष्ट साध्वी थी साध्वी सोमलताजी

हमारा शासन जयवंता शासन है। इसमें समय-समय पर अनेकानेक चारित्रात्माएं आचार्यों के शासनकाल में तपी हैं, खपी हैं। उन्होंने अपने-अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से धर्मसंघ को सेवा प्रदान की है। शासन हमारे लिए आश्वास है, विश्वास है, शरण है। हम शासन को सेवा देते हैं तो शासन हमें संरक्षण व निश्चिंतता देता है। ऐसी चारित्रात्माएं सबके लिए पूज्य है।

साध्वी सोमलताजी एक ऐसी साध्वीवरा थी जिन्होंने अपने कर्तृत्व से बहुत कुछ दिया है। उनके द्वारा विरचित कुछ गीत तो समाज में लोकप्रिय बने हैं। जैसा मैंने जाना साध्वीश्री विशिष्ट एवं प्रबुद्ध थी, कुशल वक्ता थी, उनमें साहित्यिक स्फुरणा थी।

जहां-जहां साध्वीश्री का पदार्पण तथा प्रवास हुआ वहाँ के श्रावक आज भी स्मरण करते हैं। सूरत का श्रावक समाज भी निष्ठा से याद करता है। पिछले कुछ समय से साध्वीश्री अस्वस्थ चल रही थी, पर उनका मनोबल, आत्मबल प्रशस्त था।

साध्वीश्री का यह विशेष सद्भाग्य रहा कि उन्हें मुंबई में गुरु सन्निधि का सुयोग संप्राप्त हो गया। उनके मन में गुरु के प्रति सदैव अगाध आस्था रही है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर के हृदय में अपार कृपा का भाव रहा है। आचार्यवर की विशेष अनुकंपा से उग्रविहारी तपोमूर्ति व साध्वीश्री के भ्राता मुनि कमलकुमारजी स्वामी दिल्ली से लम्बे-लम्बे विहार करते हुए पधारे। इतने वर्षों से निरंतर एकांतर तप और उसमें भी करीब चालीस-चालीस कि.मी. विहार सचमुच उनके प्रखर व्यक्तित्व का स्वयंभू साक्ष्य है।

वसंत पंचमी के दिन गुरु दर्शन के बाद गुरुवर के विशेष इंगित से दादर पधारे और भगिनी- भ्राता के परस्पर दर्शन हुए फिर मर्यादा महोत्सव के बाद पुनः दादर पधार गए। एक अच्छा सुयोग मिल गया।

अंत में संथारा पूर्वक समाधिमरण प्राप्त किया। साध्वी श्री की आत्मा निःश्रेयस् प्राप्ति की दिशा में गतिमान रहे, यह काम्य है।

–मुनि उदितकुमार

दृढ़ मनोबल की धनी थी साध्वी सोमलताजी

'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी पिछले कुछ समय से शारीरिक रूप से अस्वस्थ रह रही थी।

आज अपने सभी मनोरथ पूर्ण कर इस संसार से विदा हो चुकी हैं। आप साधुता के आस्वादन रसास्वादन में सदैव सजग रही।

गुरुत्रय व साध्वी प्रमुखा जी की आप पर सदा कृपा दृष्टि रही और उनकी कृपा दृष्टि से आपने अपने आप को एक सफल साध्वी बनाया।

मैंने देखा आप एक कुशल प्रशिक्षक भी थे तो कुशल परीक्षक भी, एक कुशल वक्ता थी तो कुशल लेखक भी, कुशल गायिका भी थी तो कुशल गीतकार भी।

अपनी प्रवचन शैली से हजारों-हजारों लोगों के सम्यक्त्व को पुष्ट किया तो अनेक अजैन भक्तों में आध्यात्मिक अभिरूचि जागृत की।

दृढ़ मनोबल की धनी साध्वी सोमलता एक पुण्यशालिनी साध्वी थी। जिसका साक्षात् उदाहरण है जीवन के अंतिम वर्षावास में गुरु की साक्षात् सन्निधि, भ्राता मुनि कमलकुमारजी स्वामी का अंतिम समय में सहयोग व संबल एवं इसके साथ ही चारों साताकारी सहयोगी साध्वियों का सहवास, ऐसा सचमुच किसी पुण्यशाली व्यक्ति को ही मिल सकता है।

सच लिखा गया।

गुलाब के मुरझाने पर भी मिट्टी में महक रह जाती है।

व्यक्ति के चले जाने पर दिल में स्मृति रह जाती है।

नमन उस आत्मा को जिसके इस लोक के जाने पर भी

श्रद्धा एवं आस्था भरी गौरव गाथा रह जाती है।

दिवंगत आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।

–'शासनश्री' साध्वी साधनाश्री

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी की स्मृति सभा

'उग्रविहारी तपोमूर्ति' मुनि कमलकुमार जी, मुनि जम्बू कुमार जी, साध्वी शकुंतलाकुमारी जी एवं साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी की स्मृति सभा का आयोजन हुआ।

'उग्रविहारी तपोमूर्ति' मुनि कमलकुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा- साध्वी सोमलता जी मेरी संसार पक्षीय ज्येष्ठ भगिनी थी, उन्होंने मुझे परमानन्द की राह पर चलने की प्रेरणा दी। आपने कहा- साध्वीश्री के जीवन में तीन आंकड़ों का अधिक योग था। तीन-तीन गुरुओं व तीन-तीन साध्वी प्रमुखाओं का वरदान रहा। जन्म के समय तीन भाई व मृत्यु के समय भी तीन भाई समीप थे, माता-पिता के नाम में भी तीन अक्षर थे। तीन अग्रगण्यों के पास रही तो अपने सहगामी तीन साध्वियों के ग्रुप लीडर बनाए और तीन क्षेत्र की साध्वियां भी साथ में थी। तेले के प्रत्याख्यान में अनशन व जिस क्षेत्र में सदा के लिए निवास किया उसमें भी तीन अक्षर थे। मुनिश्री आचार्यप्रवर एवं साध्वी प्रमुखाश्री जी के संदेश के बारे में जानकारी दी। मुनि जम्बूकुमार जी ने 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी के संदेश का वाचन करने के पश्चात कहा- साध्वी जी के साथ निकटता से बात करने का काम पिंपरी चिंचवड़ में पड़ा। उस समय से लेकर आज तक उनमें मैंने मां की छवि देखी। आखिरी समय में वे आत्मा में तल्लीन होकर समाधि मरण को प्राप्त हो गये। मुनि अमनकुमार जी, नमिकुमार जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी शकुंतलाकुमारी जी ने कहा- गणाधिपति गुरुदेव तुलसी की कृपा से 41 वर्ष तक साध्वी जी की छत्र छांव में रही। उन्होंने मुझे जो दिया उसे शब्दों में बांधना मेरे लिए कठिनतम है। साध्वी पुण्ययशा जी ने कहा- साध्वी सोमलता जी ने असहनीय वेदनीय कर्म के उदय को समता भाव से झेला। अंत में वेदनीय कर्म को पराजित कर इहलोक से तीसरे मनोरथ के साथ विदा ली।साध्वी संचितयशा जी ने विविध संस्मरणों का उल्लेख करते हुए कहा- वे पर पीड़ा को हरण करने वाली, पवित्र चित्त वाली थी। आत्मस्थ व गुरु के प्रति समर्पित थी। साध्वी जागृतप्रभा जी ने 'शासनश्री' साध्वी संघमित्राजी के संदेश का वाचन व साध्वी रक्षितयशा जी ने आचार्य प्रवर के सन्देश का वाचन कर अपने स्वरचित गीत का संगान किया।

साध्वी वर्धमानश्री जी ने साध्वी निर्वाणश्री जी व साध्वी योगक्षेमप्रभा जी द्वारा रचित गीत का, महिला मंडल ने साध्वी राकेशकुमारी जी द्वारा रचित गीत का संगान किया। साध्वी बोधिप्रभा जी ने बोधित्व प्राप्त करने की कामना की। संसारपक्षीय भाई जसकरण बैद, विजय बैद एवं पारिवारिक सदस्यों ने, चतुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, महासभा पूर्वाध्यक्ष सुरेश गोयल, किशन डागलिया, मुंबई सभा प्रेक्षा इंटरनेशनल, दादर सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल आदि विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सम्पूर्ण श्रावक-श्राविका समाज ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

चार लोगस्स के ध्यान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

होली पर जलाएं कषायों की होली

विल्लुपुरम, तमिलनाडु।

तमिलनाडु के विल्लुपुरम शहर के श्री सुसवाणी भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीपकुमार जी ठाणा -२ के सान्निध्य में 'होली चातुर्मास' का कार्यक्रम जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, विल्लुपुरम द्वारा आयोजित किया गया।

मुनिश्री ने कहा - होली लौकिक उत्सवों में प्रमुख उत्सव है। वर्ष भर के तनाव को भूलने, मिटाने का यह सबसे अच्छा दिन है। होली रंगों का त्यौहार है। मनुष्य रंगों का समवाय है, स्थूल दृष्टि से वह हाड़-मांस का पुतला है किंतु सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो मनुष्य रंगों की ही प्रतिकृति और उपज है। आभामंडल जो सर्वाधिक शक्तिशाली होता है वह भी रंगों की अनुकृति है। मुनिश्री ने आगे कहा - जैन धर्म के अनुसार चातुर्मासिक पक्खी का संबंध इसके साथ जुड़ा हुआ है। बीती बातों को भूलना सीखें। होली शब्द भी सही संदेश देता है 'होली' यानी जो हो गया उसे भूल जाओ। होली का अंग्रेजी के अनुसार अर्थ होता है पवित्रता। इस पर्व से हम पवित्रता की शिक्षा ग्रहण करें। लोग होली जलाते हैं पर वास्तव में कषायों की, बुराइयों की होली जलाएं। मुनि काव्यकुमार जी ने कहा- होली पर्व आनंद का संदेश देता है। इस अवसर पर बैर-विरोध की गांठों को खोलकर क्षमा को विकसित करें। कार्यक्रम में मंगलाचरण तेरापंथ कन्या मंडल विल्लुपुरम ने किया।

तेममं एवं तेयुप ने अलग-अलग गीत का संगान किया। सभा अध्यक्ष महेंद्र धोका ने स्वागत भाषण दिया। तिन्डिवनम से उत्तमचंद आंचलिया, स्थानकवासी समाज से ललित कातरेला, ज्योति सुराणा ने भाव व्यक्त किए। आभार ज्ञापन प्रेम सुराणा एवं संचालन राजेश सुराणा ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की द्वितीय पुण्य तिथि पर भावांजलि

रम्या थे भैक्षव शासन में

● 'शासनश्री' साध्वी धनश्री ●

शासन माता थे गण में,
साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा रो गौरव जन जन में,
पुण्य पुंज! पौरुष प्रधान, तपोधन जीवन में,
संघ गगन में ध्रुव तारो ज्यूं , चमक्या शासन में।।

विनय समर्पण री प्रतिमूर्ति, गुरु इंगित पहचान।
पल-पल दृष्टि आराधी, अंतिम तक थारां प्राण।
विदा ली गुरुवर चरणन में।।

घोर वेदना में समभावी, वीर वृति नै धार।
समता रो पाठ पढ़ायो संघ नै, है अनंत उपकार ।
शांत रस थारे कण-कण में।।

नयणां स्यूं वात्सल्य वृष्टि, अमृत रस वचन-वचन में।
निर्माण कर्यो थे चार तीर्थ रो, खप्या-तप्या गण में।
रम्या थे भैक्षव शासन में।।

आत्मसात हो ज्ञान, ज्योतिर्मय जीवन साक्षात।
बलिदानां री अमर कहानी, बणगी स्वर्णिम ख्यात।
विजयी थे जीवन रे रण में।।

प्रलंब यात्रा साथ रह्या थे, अनुभव रा भंडार।
आचार्यां रा प्रतिनिधि हा, विशाल भुजा आधार।
मिल्यो सम्बल गुरु चिंतन में।।

असाधारण साध्वीप्रमुखा, महाश्रमणी विख्यात।
तेरापंथ री अजब विभूति, थे ममता मयी मात।
नहीं भूला म्हें जीवन में।।

ज्ञानाराधना खूब करी, संपादन काव्य सुलेख।
सक्षमता प्रत्येक कार्य में, अथाह शक्ति विशेष।
लेखनी हारै वरणन में।।
वक्ता थाकै वरणन मैं ।।

लय : तावड़ा धीमो पड़ जा।

युग-युग मां का अभिनन्दन

● साध्वी संघप्रभा ●

शासन माता स्मृति पावन है।
उमड़ा श्रद्धा का सावन है।
भैक्षव शासन मनभावन है।।

चन्देरी की वह धन्य धरा, रविरथ मानो रवि घर उतरा।
ज्योतित जिससे गण आंगन है।।

वह नगर केलवा सौभागी।
संचित पुण्याई थी जागी।
तुलसी कर संयम जीवन है।।

उद्गम स्थल शुभ तेरापंथ का।
गतिमान चक्र जीवन रथ का।
पाया मुक्ति का स्पंदन है।।

सार्थक तुमने सन्यास किया।
गुरु चरणों में अभ्यास किया।
क्षितितल से शिखरारोहण है।।

गंगा सा गंगाशहर बना।
जिसने भी तेरा नाम सुना।
विस्मित स्मित जन-जन का मन है।

था नाम अपरिचित कनक प्रभा।
सुनकर चौकन्नी हुई सभा।
शोभित तुम से यह शासन है।।
अष्टम् प्रमुखा पद आसन है।।

दायित्व बखूबी वहन किया।
कितना कुछ तुमने सहन किया।
साक्षी स्वयमेव प्रशासन है।।

वात्सल्य अमीरस बरसाया।
श्रमणी गण उपवन सरसाया।
आभारी सबका कण-कण है।।

महिला जागृति पथ दरसाया।
है संघ चतुर्विध हरसाया।
पा महाश्रमणी पथदर्शन है।।

हर धड़कन में तुम जीवित हो।
दिल दर्पण में प्रतिबिम्बित हो।
अर्पित भावों का चंदन है।।

लो 'संघप्रभा' का शत वन्दन।
मेहरबां खुद नेमां नन्दन।।
वात्सल्य पीठ पर स्पन्दन है।
युग-युग मां का अभिनन्दन है।।

लयः जय बोलो संघ सितारे की

सातवां अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल कोलकाता। तेयुप पूर्वांचल कोलकाता द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर पूर्वांचल द्वारा डॉ. धीरज मरोठी के निर्देशन में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। कुल 14 व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया। तेयुप पूर्वांचल- कोलकाता से एटीडीसी के सलाहकार रवि दुगड़ ने इस शिविर में पूर्ण सहभागिता दर्ज कराई। यह शिविर सत्र 2023-24 का सातवां अस्थि चिकित्सा कैम्प था।

❖ अंधकार से डरने की जरूरत नहीं। डरना कोई समाधान भी नहीं। बस एक छोटा–सा दीप जलाने की अपेक्षा है।

-आचार्य श्री महाश्रमण

सुखी बनाने का उपाय है समता की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

शेरे।
20 मार्च, 2024

जिनवाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमणजी आज प्रातः लगभग 11 किमी का विहार कर शेरे गाँव के श्री मामासाहेब मोहोल विद्यालय में पधारे। आगम वाणी का श्रवण कराते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि अपने आप को विशेष प्रसन्न बनाने का, सुखी बनाने का उपाय बताया गया है- समता की साधना। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियां जीवन में आ सकती है, उनमें मानसिक संतुलन रखना।

शास्त्र में कहा गया है-

'लाभालाभे सुहे-दुक्खे, जीविए-मरणे तहा।
समो निंदा-पसंसासु, तहा माणावमाणओ।।'

जीवन में लाभ-अलाभ, सुख-दुख की स्थिति आ सकती है, दोनों स्थितियों में शांति, संतुलन रहना चाहिए। जीवन-मृत्यु व निन्दा-प्रशंसा की स्थिति में भी शांति व धैर्य रखना चाहिये।

यह समता और शांति का सूत्र है, यह भीतर से सुखी रहने का सूत्र है। राग-द्वेष में नहीं जाना अध्यात्म की साधना होती है। बड़े-बड़े महापुरूषों के जीवन

में कठिनाईयां और अनुकूलताएं भी आ सकती हैं। रामचंद्र जी जीवन में वनवास की स्थिति भी आई। महापुरुषों के जीवन में कठिनाइयां आ सकती हैं तो सामान्य व्यक्ति के जीवन में भी प्रतिकूलता आ सकती है, उनमें समता का परिचय दे।

विद्यार्थी पढ़ते हैं, ज्ञान का खजाना भरते हैं, यह भी एक उपलब्धि है पर साथ में अच्छे संस्कार भी आये तो जीवन सुन्दर बगिया बन सकता है। बगीचा बनाने के लिए फूलों की सुगन्ध चाहिये। विद्यालयों में अच्छें संस्कार दिये जायें कि बच्चे सच्चे और अच्छे रहें, कच्चे न रहें। उनमें ज्ञान के साथ अहिंसा, संयम, नैतिकता के अच्छे संस्कार भी आएं तो जीवन बगिया खिल सकती है।

हमारे देश में कितने-कितने विद्यालय, महाविद्यालय और विश्व विद्यालय मिलते है, जहां शिक्षक ज्ञान का आदान-प्रदान करते हैं। बालकों को शिक्षकों से अच्छे संस्कार मिले। समय-समय पर धर्मगुरुओं से भी अच्छे संस्कार मिलते रहें। बच्चे डिजिटल डिटोक्स और नशामुक्ति को अपनाएं। स्कूल के विद्यार्थियों ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की संकल्पत्रयी स्वीकार की। पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय के प्रधानाचार्य जिगले सर एवं शिक्षिका गायकवाड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

तेरापंथ टाइम्स ऑनलाईन पढ़ने के लिए terapanthtimes.com

दान के साथ ना हो नाम की भावना : आचार्य श्री महाश्रमण

अम्बडवेर।
21 मार्च, 2024

तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी पूना की ओर अग्रसर हैं। परम पूज्य आचार्य प्रवर आज प्रातः लगभग 10 किमी का विहार कर अम्बडवेर के जिला परिषद प्राथमिक शाला में पधारे। महातपस्वी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि जैन दर्शन का एक सिद्धांत है- कर्मवाद। जैन दर्शन के अनेक वाद - सिद्धांत हैं। आत्मवाद भी एक सिद्धांत है जहां आत्मा का शाश्वत अस्तित्व स्वीकार किया गया है। आत्मा अमूर्त अमर है। आत्मा असंख्य प्रदेशात्मक पिंड वाली होती है। लोकवाद भी जैन दर्शन का एक बड़ा सिद्धांत है।

आगम वांग्मय व अनेक ग्रन्थों में कर्मवाद का उल्लेख प्राप्त होता है। पुण्य-पाप अपना-अपना होता है। खुद का पुण्य और पाप खुद को ही भोगना

पड़ता है । पूज्य प्रवर ने आगे फरमाया कि दान के साथ नाम की भावना न हो। इतनी निर्मलता रहे कि नाम की भावना का पाप न लगे। दान से लाभ भी होता है। शुद्ध साधु को शुद्ध दान देने से धर्म का लाभ हो सकता है, लौकिक दान देने से ख्याति बढ़ जाती है, मित्र को दान देने से आपसी प्रेम बढ़ सकता है, शत्रु को देने से बैर भाव दूर हो सकता है, नौकर चाकर को देने से उनके मन में भक्ति का भाव बढ़ सकता है, राजा को दें तो राज में सम्मान बढ़ सकता है, कवि आदि को दान देने से वह यशोगान कर सकता है। इस प्रकार पात्र को दिया दान निष्फल नहीं जाता।

कर्मवाद का ही सिद्धांत है- जैसी करणी वैसी भरणी। जो अच्छे कार्य करेगा उसका फल अच्छा मिलेगा। बुरे कार्य का बुरा फल मिलेगा। इसको समझकर जीवन में बुरे कर्मों से बचने का प्रयास करें। धर्म के कार्यों को करने का प्रयास करें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

फार्म–8 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन-स्थान	:	नई दिल्ली
2.	प्रकाशन-अवधि	:	साप्ताहिक
3.	मुद्रक का नाम	:	पंकज कुमार डागा
	क्या भारत के नागरिक हैं?	:	हाँ
	यदि विदेशी हैं तो मूल देश का नाम	:	नहीं
	पता	:	अ0भा0 तेरापंथ युवक परिषद् 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली-110002
4.	प्रकाशक का नाम	:	पंकज कुमार डागा
	क्या भारत के नागरिक हैं?	:	हाँ
	यदि विदेशी हैं तो मूल देश का नाम	:	नहीं
	पता	:	अ0भा0 तेरापंथ युवक परिषद् 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली-110002
5.	संपादक का नाम	:	पंकज कुमार डागा
	क्या भारत के नागरिक हैं?	:	हाँ
	यदि विदेशी हैं तो मूल देश का नाम	:	नहीं
	पता	:	अ0भा0 तेरापंथ युवक परिषद् 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली-110002
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत के अधिक से साझेदार हों या जिनका हिस्सा हो	:	अ0भा0 तेरापंथ युवक परिषद् लाडनूं (नागौर-राजस्थान)

मैं पंकज कुमार डागा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक 28-03-2024

पंकज कुमार डागा
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 अप्रैल - 07 अप्रैल, 2024

जीवनरूपी महल में हो ज्ञान का प्रकाश और संस्कारों की सौरभ : आचार्य श्री महाश्रमण

ताम्हिनी।
18 मार्च, 2024

संयम के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ पहाड़ियों के उतार-चढ़ाव को पार करते हुए आज ताम्हिनी पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए परम पावन आचार्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्व है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए बच्चे दूर-दूर तक भारत में और भारत के बाहर भी चले जाते हैं। समाज में ज्ञान के प्रति जागरूकता है।

शिक्षा ज्ञान का विकास कराती है। विद्यालय-महाविद्यालय ज्ञान के केन्द्र होते हैं, जहां अध्यापक शिक्षा देते है। यह शिक्षा संस्कार युक्त हो, विद्यार्थियों में नैतिकता, अहिंसा, ईमानदारी, नशामुक्ति आदि के अच्छे संस्कार आने चाहिए।

ज्ञान एक प्रकार का प्रकाश है तो संस्कार एक प्रकार की सौरभ है। विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार भी आ जाएं तो वे विद्यार्थी अपनी आत्मा को अच्छी बनाने वाले हो सकते हैं, परिवार, समाज और राष्ट्र की अच्छी सेवा करने वाले हो सकते हैं। शिक्षक

विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। शिक्षक में अच्छे संस्कार हैं तो उनका जीवन एक अच्छा संदेश देने वाला हो सकता है। उम्र में बड़ा होना बड़ी बात नहीं है, ज्ञान और संस्कार में बड़ा होना महत्वपूर्ण है। हमें जीवनरूपी महल को ज्ञान के प्रकाश और संस्कारों की सौरभ से भरना चाहिये।

गलतियों को छोड़ने का और अच्छाईयों को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिये। जिससे इहलोक और परलोक का हित हो, सुगति प्राप्त हो सके, उसके लिए बहुश्रुत की पर्युपासना करनी चाहिये। त्यागी-संयमी, ज्ञानी साधु से अच्छा सद्ज्ञान मिल सकता है। सद्ज्ञान से आदमी को कल्याण का मार्ग प्राप्त हो सकता है। विद्यार्थी सन्मार्ग पर चलें और अच्छे बनें यह काम्य है।

अर्हम्
"शासनश्री" साध्वीश्री पानकुमारीजी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म :	वैशाख शुक्ला 12 वि.सं. 1986, श्रीडूंगरगढ़
माता :	श्रीमती बख्तावर देवी दूगड़
पिता :	श्रीमान संतोकचंद दूगड़
दीक्षा :	वि.सं. 2001, सुजानगढ़
दीक्षा प्रदाता :	आचार्यश्री तुलसी
दीक्षार्थी परिजन :	साध्वी चंपाजी (भगिनी)
सहवर्ती :	साध्वी छगनांजी की सहवर्ती के रूप में 26 वर्ष तक।
अग्रणी :	वि सं. 2026, हरियाणा में।
कंठस्थ :	दसवैकालिक, बृहत्कल्प, नंदी, उत्तराध्ययन के कुछ अध्याय, शांतसुधारस, सिंदूरप्रकर आदि 20,000 गाथा।
यात्रा :	गुजरात, मेवाड़, मारवाड़, हरियाणा, पंजाब आदि।
विशेषता :	तत्त्वज्ञान में विशेष रुचि प्रतिदिन 3,000 गाथा का स्वाध्याय। 3 आचार्यों एवं 5 साध्वी प्रमुखाओं की कृपा दृष्टि प्राप्त की।
स्वर्गवास :	वि. सं. 2080, फाल्गुन शुक्ला नवमी (18 मार्च 2024)लूनकरणसर

सम्यक्त्व के समान नहीं कोई मित्र या बन्धु : आचार्यश्री महाश्रमण

गोनावाड़ी।
19 मार्च, 2024

अध्यात्म रस की वर्षा करने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी आज प्रातः गोनावाड़ी पधारे। पूज्य प्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि जैन वांग्मय में नव तत्त्व बताये गये हैं। नव तत्त्व की जानकारी और श्रद्धा का भी अपना महत्व है। जीव-अजीव आदि नव तत्त्व उत्तराध्ययन आगम में समाविष्ट किये गए हैं। इन नव तत्त्वों का सम्यक् बोध और यथार्थ श्रद्धा हो जाये तो यह सम्यक्त्व प्राप्ति का एक उपाय माना जा सकता है।

प्रश्न होता है कि मैं कौन हूं? जो क्रियाएं शरीर द्वारा की जा रही हैं वो शरीर मैं ही हूँ या कुछ और है। मैं आत्मा हूं, जीव हूं, यह शरीर मैं नहीं हूं। यह शरीर तो नश्वर है, विनाश धर्मा है, एक दिन छूट जाता है। इसके सिवाय कोई और चीज है, वह आत्मा है। आत्मा का कभी नाश नहीं होता। वह तो अछेद्य है, शाश्वत है, अजर-अमर और अमूर्त है। मैं वह आत्मा हूं।

जो दिखाई दे रहा है, वह शरीर है, अजीव है, आत्मा से संपृक्त है। जब तक आत्मा भीतर में विद्यमान है, तब तक शरीर चलता-फिरता है। आत्मा विहीन शरीर शोभायमान नहीं रहता। आत्मा अलग है, शरीर अलग है, यह अध्यात्म का महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

आत्मा के साथ कर्म का बन्ध है, तो शरीर का भी बन्ध हो गया। बन्ध दो रूप में होता है- पुण्य का बन्ध और पाप का बन्ध। आश्रव के द्वारा कर्म का बन्ध होता है, आश्रव ही जन्म-मरण का हेतु है। संवर हो जाये तो आश्रव का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। संवर मोक्ष का कारण है, निर्जरा से पूर्व संचित कर्मो का क्षय किया जा सकता है। सब कर्मों से मुक्त होने पर सूक्ष्म और सूक्ष्मतर शरीर छूट जायेगें, केवल आत्मा रहेगी, मोक्ष प्राप्त हो जायेगा।

नौ तत्वों को समझ कर संवर और निर्जरा की साधना करें तो मोक्ष की दिशा में हमारी गति-प्रगति हो सकती है। हमारा दृष्टिकोण यथार्थ परक हो जाये। वही सत्य है, सत्य ही है, जो जिनों द्वारा प्रवेदित होता है। सम्यक्त्व एक बहुत बड़ा रत्न है। सम्यक्त्व के समान कोई दूसरा मित्र, दूसरा कोई बन्धु-भाई और दूसरा कोई लाभ नहीं है। चारित्र भी सम्यक्त्व के बिना रह नहीं सकता। सम्यक्त्व तो चारित्र के बिना भी रह सकता है।

चारित्र रहित तो मोक्ष जा सकता है, पर दर्शन रहित मोक्ष नहीं जा सकता। जिसको एक बार सम्यक्त्व आ गयी वो कभी न कभी मोक्ष अवश्य ही जायेगा। चारित्र से ज्यादा सम्यक्त्व का महत्व है। हमारा सम्यक्त्व निर्मल रहे।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**